श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं. [illegible]

श्रीरत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

॥ श्री ॥

* शीघ्रबोध या थोकड़ा प्रबन्ध *

भाग ८ वाँ

संग्राहक

श्रीमदुपकेश गच्छीय मुनि

श्री ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी).

द्रव्य सहायक । प्रकाशक

शाह अगरचन्दजी जोगराजजी लोढा फलोधी.

प्रबन्धकर्ता

शाह मेघराजजी मुणोत, फलोधी.

—o—

प्रथमावृत्ति १०००] वीर संवत् २४४७ [लागत मूल्य [illegible] आना

Shri I [illegible] Jivanatan l Press, Bikaner

भूमिका ।

प्यारे पाठक वृन्द ! आपलोग इस बात को बखूबी जानते है कि जैनागम एक महार्णव है क्योंकि जिस अर्णव के अन्दर नाना विधरत्न भरे हुवे है खास करके समुद्र का स्वभाव ही ऐसा हुवा करता है कि कतिपय पदार्थोंको प्राप्त करता है वैसे ही यह जैनागमार्णव भव्यजन को प्रमुदित करने वाला है देवानुप्रिय ! उन रत्नों को हर एक पुरुष लेना चाहता है मगर सज्जनों विदून परिश्रम रत्न का मिलना दुष्वार है वास्ते आपलोग जो अद्यावत् घोरनिद्रा में पोढेहुवे हो उसको हटाकर आप सद्रुपयों रत्नाकर में प्रवेश कीजियेगा, ठीक बात है कि समुद्र मे प्रवेश करने के लिये अवश्यमेव साधक होना चाहिये बस लीजिये महानुभावो ! यह शीघ्रबोधक नामका अष्टम भाग नौका रूप बनकर आप साहबों का ससारार्णव का पार कराने वाला है तत्व रसिक पुरुष अतीव शीघ्र इस नौका मे बैठ कर निर्मल रत्नोंका खजाना भर लीजिये ताके हे शासन भक्त ! किसी भी स्थान पर कदमों की स्खलना नहीं होगा यही सोच कर यह नौका आपके कर कमलों में रत्न निकालने के लिये और ससारार्णव का बेधडक पार करने वाला है सेवाय सशय मोवीर पुत्रो ! आलस निद्रा विकथा प्रमाद को परित्याग कर निज आत्म कल्याण करनेकी ओर खयाल करो क्योंकि यह

उपलब्ध हुवा चिन्तामणी रत्न को फिजूल कौवा उडाने में मत फेंकदो यह वक्त पुनः पुनः नहीं मिलती है वास्ते हे विद्वद्वर्य ! पढो पढो और और पढो और आगम रसका पान करो ताके नृजन्म का कुछ सार्थकता को प्राप्त करो सिर्फ हमारा इतना उल्लेख इस ही बातको ठिक २ तौर से जाहिर कर रहा है कि यह परमोपकारी शीघ्रबोधक नाम के प्रथम से अष्टम भाग तक को सकृपया कण्ठस्थ करके हमे भी कृतार्थ कीजियेगा यही सकल महानुभावों से मेरी गुजारिश है ॥ किमधिकं ॥



विषय अनुक्रमणिका ।



॥ वंदे वीरम् ॥

श्री रत्नप्रभसुरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ।

॥ श्री गुरुगुणाष्टकम् ॥

* दोहा *

पार्श्वपाट सुभदत्त गणी, हरिदत्त आर्य समुद्र ।
केशीश्रमण प्रतिबोधीया, कीय दश नरेन्द्र ॥ १ ॥
भिनमाल भव तारवा, वारवा मिथ्या जाल ।
स्वयप्रभसूरी किया, श्रीमाली पोरवाल ॥ २ ॥
रत्नप्रभसूरी आविया, ओसीया नगरी मजार ।
ओशवन्स जैनी किया, तीनलक्ष चोराशी हजार ॥ ३ ॥
राजगृही मणिभद्रने, प्रतिबोध्यो हित काज ।
सवा लक्ष जैनी किया, यक्षसूरी महाराज ॥ ४ ॥
कक्कसूरी करुणा निधि, देश कनोज मे जाय ।
जीव छोडाया यज्ञका, दीया जैन बनाय ॥ ५ ॥
गुप्तपणे रहे देवता, करे शासनका काम ।
स्मरणथी शिवपद लहे, देव गुप्तसूरी नाम ॥ ६ ॥
सिद्धपद वरवा नित्य नमु, सिद्धसूरी महाराज ।
पाच नाम जो पाच्छला, अविच्छिन्न चाले आज ॥७॥
उपकेशी उपकेश गच्छ, कमलापति सूजान ।
भवसागर तरवा भणी, सरणे आयो ज्ञान ॥ ८ ॥



॥ श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

शीघ्रबोध (अथवा) थोकड़ा प्रबंध भाग ८ वां।



सकलदेवनरेश्वरवन्दितम्, विबुधमानवमस्तुतपूजितम्।
कमललोचनरञ्जितनागरम्, भविकपातकतामसभास्करम्॥



थोकडा नं० १

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० १

(योगों की अल्पा बहुत्व)

संसारी जीवों के चौदह भेद है—जैसे सूक्ष्म एकेन्द्रि के दो भेद पर्याप्ता, अपर्याप्ता, बादर एकेन्द्रि के दो भेद पर्याप्ता, अपर्याप्ता एवं बेन्द्रि, तेरिन्द्रि, चोरिन्द्रि, सन्नी पचेन्द्रि और असन्नी पचेन्द्रि के दो दो भेद पर्याप्ता अपर्याप्ता करके १४ भेद हुवे।

जीव के आत्म प्रदेशों से अध्यवसाय उत्पन्न होते है और वे शुभाशुभ करके दो प्रकार के हैं। इन अध्यवसायों की प्रेरणा से जीव पुद्गल को ग्रहण करके प्रणमाता है उसे परणाम कहते हैं वह सूक्ष्म है और परणामों की प्रेरणा से लेश्या होती है और लेश्या की प्रेरणा से मन वचन काय का व्यापार होता है जिसे योग कहते हैं। योग दो प्रकार के होते हैं। (१) जघन्य योग (२) उत्कृष्ट योग। ऊपर जो १४ भेद जीवों के कहे हैं उनमें जघन्य और उत्कृष्ट योग की तरतमता है उसी को अल्पा बहुत्व करके अब नीचे बतलाते हैं:—

(१) सबसे थोडा सूक्ष्म एकेन्द्रि के अपर्यासा का जघन्य योग.
(२) बादर एकेन्द्रि के अपर्यासा का जघन्य योग असं० गुणा
(३) बेरिन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(४) तेरिन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(५) चौरिन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(६) असन्नी पंचेन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(७) सन्नी पंचेन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(८) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्यासा ,, ,, ,,
(९) वादर एकेन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(१०) सुक्ष्म एकेन्द्रि के अपर्यासा का उत्कृष्ट० ,, ,,
(११) वादर एकेन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(१२) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्यासा का ,, ,, ,,
(१३) वादर एकेन्द्रि के ,, ,, ,, ,,
(१४) वेरिन्द्रि के पर्यासा का जघन्य० ,, ,,

(१५) तेरिन्द्रि के	"	"	"	"
(१६) चौरिन्द्रि के	"	"	"	"
(१७) असन्नी पचेन्द्रि के	"	"	"	"
(१८) सन्नी पचेन्द्रि के	"	"	"	"
(१९) बेरिन्द्रि के अपर्याप्ता का उत्कृष्ट०			"	"
(२०) तेरिन्द्रि के	"	"	"	"
(२१) चौरिन्द्रि के	"	"	"	"
(२२) असन्नी पचेन्द्रि के	"	"	"	"
(२३) सन्नी पचेन्द्रि के	"	"	"	"
(२४) बेरिन्द्रि के पर्याप्ता का		"	"	"
(२५) तेरिन्द्रि के	"	"	"	"
(२६) चौरिन्द्रि के	"	"	"	"
(२७) असन्नी पचेन्द्रि के	"	"	"	"
(२८) सन्नी पचेन्द्रि के	"	"	"	"

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० २.

(श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० १)

जीव के योगों की तरतमता देखने के लिये यह थोकड़ा खूब दीर्घदृष्टि से विचार करने योग्य है ।

प्रथम समय के उत्पन्न हुवे दो नारकी के नेरीया क्या सम योग वाले है या विषम योग वाले है ? स्यात् सम योग वाले है स्यात् विषम योग वाले है। क्योंकि प्रथम समय के उत्पन्न हुवे नारकी के नेरीयों के योग अहारीक से अणाहारीक और अणाहारीक से अहारीक के परस्पर स्यात् न्यून है. स्यात् अधिक है और स्यात् बराबर भी है। यद्यपि न्यून हो तो असंख्यात् भाग, संख्यात् भाग, संख्यात् गुण, असंख्यात् गुण न्यून हो सकते है और अगर अधिक हो तो इसी तरह असंख्यात् भाग, संख्यात् भाग. संख्यात् गुण, असंख्यात् गुण अधिक होते है और यदि बराबर हो तो दोनों के योग तुल्य होते है। यथा:—

(१) एक समय का अहारीक है परन्तु मींडक गती करके आया है और दूसरा जीव भी एक समय का अहारीक है परन्तु ईलका गती करके आया है। इन दोनों के योग असंख्यात् भाग न्यूनाधिक है।

(२) एक जीव एक समय का अहारीक है और मींडक गती से आया है तथा दूसरा जीव दो समय का अहारीक है परन्तु एक वंका गती करके आया है। इन दोनों के योग संख्यात् भाग न्यूनाधिक है।

(३) एक जीव एक समय का अहारीक है और मींडक गती करके आया है दूसरा एक समय का अणाहारी है परन्तु एक वंका गती करके आया है। इनके योग संख्यात् गुण न्यूनाधिक है।

(४) एक जीव एक समय का अणाहारीक मोडक गती करके आया है और दूसरा दो समय का अणाहारी दो समय की वका गती करके आया है। इन दोनों के योगों में असंख्यात गुण न्यूनाधिक पने है।

जैसे नारकी कहे उसी माफक शेष भुवनपति १० स्थावर ५, विकलेन्द्रि ३, त्रियच पर्चेद्रि १, मनुष्य १ व्यन्तर १, ज्योतिषी १, वैमानिक १, एवं चावीस दंडक भी समझ लेना। विशेष विस्तार की चाह वालों को गुरु महाराज की उपासना करनी चाहिये ॥ इति ॥

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ३.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० १.

(योगों की अल्पा बहुत्व)

योग १५ है यथा (४ मनका) सत्य मन योग, असत्य मन योग, मिश्र मन योग और व्यवहार मन योग। (४ वचन का) सत्य वचन योग, असत्य वचन योग, मिश्र वचन योग और व्यवहार वचन योग। (७ काय का) औदारीक काय योग,

औदारीक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र काय योग, आहारीक काय योग, आहारीक मिश्र काय योग और कार्मण काय योग। एवं १५।

योग के स्थान असंख्याते हैं परन्तु यहां समान्यता से १५ ही को ग्रहण कर प्रत्येक के दो दो भेद जघन्य और उत्कृष्ट करके ३० बोलों की अल्पा बहुत्व कही है यथा:—

(१) सबसे थोडा कार्मण का जघन्य योग.
(२) औदारीक के मिश्र का जघन्य० असं० गुणा.
(३) वैक्रिय के " " " "
(४) औदारीक का " जघन्य० " "
(५) वैक्रिय का " " " "
(६) कार्मण का " उत्कृष्ट० " "
(७) अहारीक के मिश्र का जघन्य " "
(८) अहारीक के मिश्र का उत्कृष्ट० " "
(९) औदारीक के मिश्र का और वैक्रीय के मिश्र का उत्कृष्ट योग परस्पर तुल्य और ८ में बोल से असंख्यात गुणा.
(१०) व्यवहार मनका जघन्य० असं० गुणा.
(११) अहारीक का " " "
(१२) तीन मन का और चार वचन का जघन्य योग परस्पर तुल्य और ११ बोल से असंख्यात गुणा.
(१३) अहारी का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुणा.

(१४) औदारीक काय योग, वैक्रीय काय योग, चार मन का और चार वचन का एवं १० का उत्कृष्ट योग परस्पर तुल्य और १३ वें बोल से अस० गुणा ॥ इति ॥

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं० ४.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० २.

(द्रव्य)

द्रव्य दो प्रकार के हैं। जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। जीव द्रव्य क्या सख्याता हैं, असख्याता है या अनन्ता है ? सख्याता, असख्याता नहीं किन्तु अनन्ता है क्योंकि जीव अनन्ता है इसी वास्ते जीव द्रव्य भी अनन्ता है।

अजीव द्रव्य क्या सख्याते, असख्याते या अनन्ते हैं ? सख्याते, असख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं क्योंकि अजीव द्रव्य पाच हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय असख्यात प्रदेशी हैं। आकाश और पुद्गल के अनन्ते प्रदेश हैं और काल वर्तमान एक समय है, भूत, भवीष्यापेक्षा अनन्ता समय है इस वास्ते अजीव द्रव्य अनन्ता है।

जीव द्रव्य अजीव द्रव्यके काम आवे, या अजीव द्रव्य जीव द्रव्य के काम आवे ? जीव द्रव्य अजीव द्रव्य के काम नहीं आवे किन्तु

अजीव द्रव्य जीव द्रव्य के काम आवे क्योंकि जीव अजीव द्रव्य को ग्रहण करके १४ बोल निपजावे (उत्पन्न करे)। यथा—औदारीक शरीर १, वैक्रिय शरीर २, अहारीक शरीर ३, तेजस शरीर ४. कार्मण शरीर ५, श्रोतेन्द्री ६, चक्षुन्द्री ७, घ्राणेन्द्री ८, रसेन्द्री ९, स्पर्शेन्द्री १०, मन योग ११, वचन योग १२, काय योग १३, सासोस्वास १४, एवं चौदा।

अजीव द्रव्य के नारकी का नेरीया काम में आवे या अजीव द्रव्य नारकी के नेरीय के काम आवे ? अजीव द्रव्य के नारकी काम में नहीं आवे परन्तु नारकी के अजीव द्रव्य काम में आवे। यावत् ग्रहण करके १२ बोल निपजावे। औदारीक शरीर, अहारीक शरीर वर्ज के इसो माफक १३ दंडक देवताओं का भी समझ लेना और पृथ्वीकाय अजीव द्रव्य को ग्रहण करके ६ बोल निपजावे। ३ शरीर, १ स्पर्शेन्द्री, १ काय योग, १ सासोस्वास। इसी तरह अपकाय तेउकाय और वनास्पतिकाय भी कह देना तथा वायु काय में ७ बोल कहना याने वैक्रिय शरीर अधिक कहना और बेरिन्द्री में ८ बोल शरीर ३ इन्द्री २ योग २ और सासो स्वास। तेरिन्द्री में ९ इन्द्री एक वधी। घ्राणेन्द्री चौरिन्द्रीमें १० इन्द्री एक वधी चक्षु। त्रियंच पंचेन्द्री में १३ बोल शरीर ४ इन्द्री ५ योग ३ और सासो स्वास एवं १३ और मनुष्य सम्पूर्ण १४ बोल उत्पन्न करे।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ५.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० २

(स्थितास्थित)

हे भगवान्! जीव औदारिक शरीरपणे जो पुद्गल ग्रहण करते है वे क्या "ठिया" स्थिर-याने अकम्प पुद्गल ग्रहण करें या "अठिया" कम्पायमान पुद्गल ग्रहण करें? गौतम! अकम्प पुद्गल भी ले और कम्पायमान पुद्गल भी ले, यदि स्थिर पुद्गल ले तो क्या द्रव्य से ले, क्षेत्र से ले, काल से ले या भाव से ले? अगर द्रव्य से ले तो अनन्त प्रदेशी, क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश अवगाहा, काल से एक समय दो तीन यावत् असंख्यात समय की स्थिती का, भाव से ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श को लेवे, अगर वर्ण का लेवे तो एक गुण काला दो तीन यावत् अनन्त गुण काला का लेवे एवं १३ बोल वर्णादि २० बोल मे लगाने से भाव का २६० भागा, और स्पर्श किया हुआ १, अवगाहा २, अनन्तर अवगाहा ३, अणुए ४, बादर ५, उर्द्धदिशीका ६, अधोदिशीका ७, तीयग्दिशीका ८, आदिका ९, माध्यका १०, अन्तका ११, अनुपूर्वी १२, सविषय १३ निर्व्याघात ६ दिशा व्याघात आश्री स्यात तीन दिशी चार दिशी पांच दिशी १४ एवं द्रव्यका १ क्षेत्रका १, कालका १२, भावका २६० और स्पर्शादि १४, कुल २८८ बोल का पुद्गल औदारिक शरीर पणे ग्रहण करे एवं

वैक्रिय, अहारिक परन्तु नियमां छे दिशी का लेवे, कारण त्रस-नाली में है, और तेजस शरीर की व्याख्या औदारीक शरीर माफिक करना तथा कार्मण शरीर द्रव्यादि २३६ बोलका पुद्गल ग्रहण करे, विस्तर थोकड़ा शीघ्रबोध भाग ३ भाषा पद्में लिखा है वहां से समझ लेना।

जीव श्रोतेन्द्री पणे २८८ बोल वैक्रिय शरीर की माफिक नियम छे दिशि का पुद्गल ग्रहण करे एवं चक्षु, घ्राण, रसेन्द्री भी समझना, स्पर्शेन्द्री औदारीक शरीर की माफक समझना।

मन वचन पणे कार्मण शरीर के माफिक चौफरसी पुद्गल ग्रहण करे। परन्तु त्रसनाली में होने से नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे और काय योग तथा सासोस्वास औदारीक शरीर के माफिक २८८ बोलका पुद्गल ग्रहण करे, व्याघाता श्री ३–४–५ दिशी का और निर्व्याघात आश्री नियमा ६ दिशीका पु० ग्रहण करे, इति। समुचय जीव उपर चौदा (५ शरीर, ५ इन्द्री, ३ योग, १ सासोस्वास) बोल कहा इसी को अब प्रत्येक दंडक पर लगाते है।

नारकी, देवता में १२ बोल पावे (अहारीक औदारीक वर्जके) समुचयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का समझना।

पृथ्वी, अप, तेउ और वनस्पति में ६ बोल (शरीर, ३ इन्द्रय, काय सासोस्वास) पावे और समुचयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे, परन्तु दिशी में स्यात् ३–४–५ दिशी निर्व्या-

घात नियमा ६ दिशी का पुद्गल ले एवं वायु काय परन्तु वैक्रिय शरीर अधिक है, और वैक्रिय शरीर पुद्गल नियमा छे दिशी काले।

बेरिन्द्री में ८ तेरिन्द्री मे ९ चौरिन्द्री में १० सर्व समुचयवत् समझना परन्तु नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहणकरे।

त्रियच पचेन्द्री १३ बोल (अहारक वर्जे के) और मनुष्य १४ बोल पावे। सर्वाधिकार समुचयवत् २८८ बोल का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का ले क्योंकि १९ दडक का जीव केवल त्रसनाली में ही होते हैं इसलिये नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे शेष ५ दडक स्थावर का सर्व लोक में है वास्ते स्यात् ३-४-५ दिश का ले लोक के अन्ताश्री। इस थोकड़े को ध्यान पूर्वक विचारो।

सेवंभते सेवभते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ६.

श्री भगवती सूत्र श० २५—उ०३.

(सस्थान)

सस्थान-आकृती को कहते है जिसके दो भेद जीव सस्थान समचौरमादि छे भेद ओर अजीव सस्थान परिमडलादि छे भेद है। यहा पर अजीव सस्थान के भेद विचार लिखते हैं—(१)

परिमंडल संस्थान जो चूड़ी के आकार होता है (२) वट्ट संस्थान गोल लड्डू के आकार (३) त्रंस-सिंघोडे के आकार (४) चौरस चौकीके आकार (५) आयतन लम्बा आकार (६) अन्वस्थित इनपांचों से विपरीत हो। परिमंडल संस्थान के द्रव्य क्या संख्याते, असंख्याते या अनन्ते हैं ? संख्याते, असंख्याते नही किन्तु अनन्ते है एवं यावत् अन्वस्थादि छेओं संस्थान के कह देना कि अनन्ता है।

परिमंडल संस्थान के प्रदेश क्या संख्याते, असंख्याते, या अनन्ते है ? संख्याते असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते है। यावत् अन्वस्थादि छेओं संस्थान के कहना। अब इन छओं संस्थानों की द्रव्यापेक्षा अल्पावहुत्व कहते हैः—

(१) सब से थोडा परिमंडल संस्थान के द्रव्य.
(२) वट्ट संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(३) चौरस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(४) त्रंस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(५) आयतन संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(६) अन्वास्थित संस्थान के द्रव्य असंख्यात गुणा.

प्रदेशापेक्षा संस्थानों की अल्पावहुत्व भी इसी माफिक समझ लेना। अब द्रव्य प्रदेशापेक्ष दोनों की शामिल अल्पावहुत्व कहते है—(१) सब से थोड़ा परिमंडल संस्थान का द्रव्य (२) वट्ट द्रव्य सं० गुणा० (३) चौरस द्रव्य सं० गुणा० (४) त्रंस द्रव्य सं० गुणा० (५) आयतन द्रव्य सं० गुणा० (६)

अवस्थित द्रव्यअस० गुणा० (७) परिमंडल प्रदेश अस० गुणा० (८) वट्ट प्रदेश स० गुणा० (९) चोरस प्रदेश स० गुणा० (१०) त्रस प्रदेश स० गुणा० (११) आयतन प्रदेश स० गुणा० (१२) अनवस्थित प्रदेश अस० गुणा० इति ।

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं० ७.

श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० ३

(संस्थान)

संस्थान पांच प्रकार के होते हैं—यथा परिमंडल० वट्ट० त्रस०चोरस० आयतन परिमंडल संस्थान क्या संख्याते,असंख्याते या अनंते हे ? संख्याते, असंख्याते नहीं किंतु अनंते है एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना ।

रत्नप्रभा नारकी में परिमंडल संस्थान अनन्ते है, एवं यावत् आयत संस्थान भी अनन्ते हैं, इसी तरह ७ नारकी, १२ देवलोक, ९ ग्रैवेक, ५ अनुत्तर और सिद्ध शिला, पृथ्वी एवं ३५ बोलों में पांचों संस्थान अनन्ते हैं, पैतीस को पांच गुणा करने से १७५ भागा हुवा ।

एक यव मध्य परिमंडल संस्थान में दूसरे परिमंडल संस्थान कितने है ? अनन्ते हैं एवं यावत् आयत संस्थान भी अनन्ता

कहना, इसी तरह एक यव मध्य परिमंडल की माफिक शेष वट्टादि चारों संस्थानों की व्याख्या करनी एक संस्थान में दूसरे पांचों संस्थान अनन्त है इसलिये पांच को पांचका गुणा करने से २५ बोल हुवे. पूर्ववत् नरकादि ३५ बोलों में २५-२५ बोल पावे एवं कुल ८७५ भांगा हुवा और १७५ पहिली का सब मिलके १०५० भांगा हुवा।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम्।

थोकड़ा नं० ८.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ३

(संस्थान).

पुद्गल परमाणु के एकत्रित होने से अजीव का संस्थान (आकार) बनता है उसी का सविस्तार वर्णन करेंगे कि कितने २ परमाणु इकट्ठे होने से कौन २ से संस्थान की उत्पती होती है।

परिमंडल संस्थान के दो भेद होते हैं, परतर और घन। जो परतर परिमंडल संस्थान है वह जघन्य से जघन्य २० प्रदेश का होता है और अवगाहना भी २० आकाश प्रदेश की होती है। उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी और असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाही होता है और घन परिमंडल संस्थान जघन्य

४० प्रदेशी और ४० आकाश प्रदेश अवगाही होता है, और उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी असंख्याते आकाश प्रदेश अवगाहता है, शेष यंत्र से समझना —

संस्थान	परतर		घन	
	उज प्र०	जुम प्र०	उज प्र०	जुम प्र०
वट्ट जघन्य	५	१२	७	३२
त्रंस ,,	३	६	४	३५
चौरंस ,,	४	९	८	२७
आयत ,, *	१५	६	४५	१२

नोट—*अयतन का तीसरा भेद श्रेणी है उन के उज प्र० ३ जुम प्र० २ है ।

जघन्य जितने प्रदेश का संस्थान होता है उतनाही आकाश प्रदेश अवगाहता है और उत्कृष्ट प्रदेश सब संस्थान अनन्त प्रदेशी है और असंख्याता आकाश प्रदेश अवगाहते हैं।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ९.

श्री भगवती सूत्र श० १८-उ० ४

(जुम्मा)

लोक में जो जीव अजीव पदार्थ है वे द्रव्य और प्रदेश

पेक्षा कितने २ हैं उनकी गिणती करने के लिये यह संख्या बाधी है।

गोतम स्वामी भगवान् से पूछते हैं कि हे भगवान ! जुम्मा कितने प्रकार के हैं ? (गौतम) चार प्रकार के—कुड जुम्मा, तेउगा जुम्मा, दावर जुम्मा, और कलउगा जुम्मा। जैसे किसी एक रासी में से चार चार निकालने पर शेष ४ बचे उसे कुड जुम्मा कहते है। इसी तरह चार २ निकालते हुवे शेष ३ बचे उसे तेउगा जुम्मा कहते है। अगर चार २ निकालने पर शेष २ बचे तो दावर जुम्मा, कहते हैं और एक बचे तो कलउगा जुम्मा, कहते है। नारकी के नेरिया क्या कुड जुम्मा है, यावत् कलउगा जुम्मा है ? जघन्य पदे कुड जुम्मा, उत्कृष्ट पदे तेउगा, मध्यम पदे चारों भांगा पावे। इसी तरह १० भुवनपती १ त्रियंच पंचेन्द्री, १ मनुष्य, १ व्यंतर, १ ज्योतिषी और वैमानिक एवं १६ दंडक, समझ लेना।

पृथ्वी काय जघन्य पदे कुड जुम्मा, उत्कृष्ट पदे दावर जुम्मा और मध्यम पदे चारों भांगा पावे। इसी तरह अप, तेउ, वायु, बेरिन्द्री, तेरिन्द्री और चौरिन्द्री भी समझ लेना।

वनस्पति जघन्य उत्कृष्ट पदे अपदा मध्यम पदे चारों भांगा पावे एवं सिद्ध भगवान भी समझना.

पनरह दंडक की स्त्री (मनुष्य १, त्रियंच १, देवता १३)

जघन्य उत्कृष्ट पदे कुड जुम्मा, और मध्यम पदे चारों भागा।
॥ इति जीवरासी ॥

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्

थोकड़ा नं० १०.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३

(सस्थान जुम्मा)

हे भगवान्! एक परिमडल सस्थान का द्रव्य क्या कुड जुम्मा है यावत् कलउगा जुम्मा है? गौतम कलउगा जुम्मा है, शेष कुडजुम्मादि तीन बोल नही पावे। एव वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझना क्योंकि एक द्रव्यका प्रश्न है इस लिये कलउगा जुम्मा ही होवे।

घणा परिमडल सस्थान के प्रश्नोत्तर में पहिले इसके दो भेद बताये है समुचय (सर्व) और अलग अलग। समुचय आश्री परिमडल सस्थान है वह कोई समय कुड जुम्मा है यावत् स्यात् कलयुगा है और अलग अलग की अपेक्षा से कोई भी समय पूछो एक कलउग जुम्मा मिलेगा शेष ३ बोल नहीं, एव वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझ लेना।

हे भगवन्! एक परिमडल सस्थान के प्रदेश क्या कुड जुम्मा है यावत् कलउगा है? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा है

यावत् स्यात् कलउगा जुम्मा है। घणा परिमंडल की पुच्छा समुचय की अपेक्षा स्यात् कुड जुम्मा है यावत् स्यात् कलयुग जुम्मा है और अलग अलग की अपेक्षा कुड जुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एवं, वट्ट, त्रंस, चौरस और आयतन भी कहना।

हे भगवन्! क्षेत्रापेक्षा एक परिमंडल संस्थान क्या कुड जुम्मा क्षेत्र अवगाहा है यावत् कलयुग जुम्मा क्षेत्र अवगाहा है? (गौतम) कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है, शेष ३ बोल नहीं एवं एक वट्ट संस्थान स्यात् कुड जुम्मा, तेउगा और कलयुगा प्रदेश अवगाहा है दावर जुम्मा नहीं, और एक त्रंस संस्थान स्यात् कुड जुम्मा, तेउगा, और दावर जुम्मा प्रदेश अवगाहा है। शेष कलयुगा नहीं, और चौरस संस्थान स्यात् कुड जुम्मा, तेउगा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है। दावर जुम्मा नहीं और आयत संस्थान स्यात् कुड जुम्मा, तेउगा, दावर जुम्मा अवगाहा है, कलयुगा नहीं।

घणा परिमंडल संस्थान की पृच्छा—समुचय आश्री कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है, एवं शेष घणा चार संस्थानों की अपेक्षा भी कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है कारण पांचों संस्थान पूर्ण लोक व्याप्त है सो लोक कुड जुम्मा प्रदेशी है और अलग २ घणा परिमंडल संस्थानों की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा, प्रदेश अवगाहा है। घणा वट्ट संस्थान अलग-२ की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा, घणा तेउगा,

घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा हे । घणा त्रस सम्थान अलग२ की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा, घणा तेउगा, घणा दावर जुम्मा प्रदेश अवगाहा है, घणा चौरस सस्थान अलग २ की अपेक्षा (वट्टवत्) घणा कुड जुम्मा, तेउगा, कलयुग प्रदेश अवगाहा हे, और अलग २ घणा आयत सस्थान घणा कुड जुम्मा प्रदेश यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा हैं।

हे भगवान्! एक परिमडल सस्थान कालापेक्षा क्या कुड जुम्मा समय की स्थिती वाला है। यावत् कलयुगा समय की स्थिती वाला है? गौतम स्यात् कुड जुम्मा समय की स्थिति वाला है एव यावत् कलयुगा समय की स्थिती वाला है। इसी तरह वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन सस्थान भी चारों बोलके समय की स्थिती वाला कहना। घणा परिमडल सस्थानकी पृच्छा, समुच्चय आश्री स्यात् कुड जुम्मा, एव यावत स्यात् कलयुगा समय की स्थिती का है कहना और अलग२ की अपेक्षा भी इसी तरह घणा कुड जुम्मा यावत् घणा कलयुगा समय की स्थिति का कहना। एव शेष वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन की भी व्याख्या परिमडलवत् करनी।

हे भगवान्! एक परिमडल सस्थान भावाश्री काला गुण के पर्यवापेक्षा क्या कुड जुम्मा है, यावत कलयुगा है? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा है। एव यावत् आयतन सस्थान भी कहदेना। घणा परिमडल सस्थान की पृच्छा, समुच्चयाश्री स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात कलयुगा है, और अलग २ अपेक्षा घणा कुड जुम्मा है यावत् घणा कलयुगा है कहना।

एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना। यह एक काले वर्ण की अपेक्षा कहा है। इसी तरह ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श को पांचों संस्थानों में कह देना। इति॥

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम्।

थोकड़ा नं० ११.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३.

(श्रेणी).

आकाश प्रदेश की पंक्ती को श्रेणी कहते हैं। गौतम स्वामी भगवान् से प्रश्न करते है कि हे भगवान! समुचय आकाश प्रदेश की द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या संख्याती, असंख्याती या अनन्ती हैं? (गौतम) संख्याती, असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है। इसी तरह पूर्वादि छे दिसि की भी कहदेना। एवं समुचयवत् अलोकाकाश की भी श्रेणी कहदेना (अनन्ती है)।

द्रव्यापेक्षा लोकाकाश के श्रेणी की पुच्छा? (गौतम) संख्याती नहीं, अनन्ती नहीं किन्तु असंख्याती हैं। इसी तरह छे दिशी भी कह देना।

प्रदेशापेक्षा समुचय आकाश प्रदेश के श्रेणी की पुच्छा? गौतम! संख्याती असंख्याती नही किन्तु अनन्ती है, एवं पूर्वादि छे दिशी की भी कहना।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाश के श्रेणी की पृच्छा ! गौतम, स्यात् सख्याती, स्यात् असख्याती हैं परन्तु अनन्ती नहीं, एव पूर्वादि चार दिशी कहना, परन्तु ऊंची नीची केवल असख्याती है ।

प्रदेशापेक्षा अलोकाकाश के श्रेणी की पुच्छा ! गौतम, स्यात् सख्याती, असख्याती अनन्ती है । परन्तु पूर्वादि चार दिशी में नियमा अनन्ती है, ऊंची नीची में तीनों बोल पावे * ।

समुचय श्रेणी क्या सादि सान्त है (१) सादि अनन्त हैं (२) अनादि सान्त हैं (३) या अनादि अनन्त है ? गौतम ! अनादि अनन्त हैं शेष तीन भागा नहीं, इसी तरह पूर्वादि छे दिशी भी समझ लेना ।

लोकाकाश के श्रेणी की पुच्छा ! गौतम ! सादि सान्त है शेष तीन भागा नहीं, एव छे दिशी भी समझ लेना ।

अलोकाकाश के श्रेणी की पुच्छा, गौतम ! स्यात् सादि सान्त यावत् अनादि अनन्त चारों भागा पावे यथा—

(१) सादि सान्त—लोक की व्याघात में ।
(२) सादि अनन्त—लोक के अन्त में अलोक की आदि है परन्तु फिर अन्त नहीं ।

---

* लोकालोक में स्यात् सख्याती श्रेणी कहने का कारण यह है कि लोक के अन्त में लोक और अलोक का खूणा है वहा पर सख्याता आकाश प्रदेश लोका लोक की अपेक्षा से है इसी वास्ते सख्याती श्रेणी कही ।

(३) अनादि सांत—अलोक की अनादि है परंतु लोक के पास में अन्त है।

(४) अनादि अनन्त—जहां लोक का व्याघात न पड़े वहां।

पूर्व पश्चिम और उत्तर दक्षिण दिशी सादी सान्त वर्ज देणा तथा ऊंची नीची दिशी पूर्ववत् चारों भांगा पावे।

हे भगवान्! द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या कुड जुम्मा है? यावत् कलयुगा है? (गौतम) कुड जुम्मा है, शेष तीन भांगा नहीं एवं यावत् छे दिशी में कहना, इसी तरह द्रव्यापेक्षा लोकाकाश की श्रेणी भी समझलेना, यावत् छे दिशी की व्याख्या करदेना एवं अलोकाकाश की भी व्याख्या करना।

प्रदेशापेक्षा आकाश श्रेणी की पृच्छा, (गौतम) कुडजुम्मा है शेष तीन भांगा नहीं एवं छे दिशी।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाश के श्रेणी की पृच्छा, (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा है स्यात् दावर जुम्मा है शेष दो भांगा नहीं, एवं पूर्वादि चार दिशी, और उर्द्ध अधो दिशी पेक्षा कुड जुम्मा है शेष तीन भांगा नहीं।

प्रदेशा पेक्षा अलोकाकाश के श्रेणी की पुच्छा, (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, एवं छे दिशी परन्तु ऊंची नीचे दिशी में कलयुगा वर्ज के शेष ३ भांगा कहना।

श्रेणी सात प्रकार की है (१) ऋजु (सीधी) (२) एक वका (३) दो वका (४) एक खूणा नाली (५) दो खूणानाली (६) चक्रनाल (७) अर्ध चक्रवाल (स्थापना)।



हे भगवान् ! जीव अनुश्रेणी (सम) गति करे या विश्रेणी (विषम) ? (गौतम) अनुश्रेणी गती करे परन्तु विश्रेणी गति नहीं करे इसी तरह नारकादि २४ दंडक के जीव समझ लेना, एवं परमाणु पुद्गल भी अनुश्रेणी करे, विश्रेणी नहीं करे, द्विप्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशा भी अनुश्रेणी करे विश्रेणी न करें। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १२.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४

(द्रव्य)

द्रव्य छे प्रकार के हैं—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल।

हे भगवान् ! धर्मास्तिकाय द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है ? (गौतम) कलयुगा है शेष तीन बोल

नहीं, क्योंकि धर्मास्तिकाय द्रव्यापेक्षा एकही है एवं अधर्मास्तिकाय और आकाश भी समझ लेना।

द्रव्यापेक्षा जीव की पृच्छा? गौ० कुड जुम्मा है शेष तीन बोल नहीं एवं काल भी।

द्रव्यापेक्षा पुद्गलास्तिकाय की पृच्छा! (गौतम) स्यात् कुड जुम्मादि चारों बोल पावे।

हे भगवान्! प्रदेशापेक्षा धर्मास्तिकाय क्या कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है? (गौतम) कुडजुम्मा है शेष तीन बोल नहीं एवं अधर्मास्ति कायादि छेओं द्रव्य प्रदेशापेक्षा कुड जुम्मा है।

षट् द्रव्यों की द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व—

(१) धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय, द्रव्यापेक्षा परस्पर तुल्ला और सब से थोड़ा है।
(२) जीव द्रव्य अनन्त गुणा (३) पुद्गल द्रव्य अनन्त गुणा और
(४) काल द्रव्य अनन्त गुणा।

षट् द्रव्यों की प्रदेशापेक्षा अल्पा बहुत्व—

(१) धर्माधर्मास्तिकाय के प्रदेश परस्पर तुल्य और सब से स्तोक है।
(२) जीवों के प्रदेश अनन्त गु०। (३) पुद्गल प्रदेश अनंत गुणा। (४) काल प्र० अनं० गु०।
(५) आकाश के प्रदेश अनन्त गुणां।

एकेक द्रव्यकी द्रव्य और प्रदेशापेक्षा अल्पा बहुत्व—

(१) धर्मास्तिकाय द्रव्य अपेक्षा स्तोक, तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा ।

(२) अधर्मास्ति० द्रव्य अपेक्षा स्तोक, तस्य प्रदेश अ० गुणा एवं जीव और पुद्गल भी ।

(३) आकाशास्ति० द्रव्य अपेक्षा स्तोक, तस्य प्रदेश अनन्त गुणा और काल की अल्पाबहुत्व नहीं ।

षट् द्रव्य के द्रव्य और प्रदेशों की अल्पा०—

(१) धर्मास्ति० अधर्मास्ति० और आकाशास्ति काय के द्रव्य परस्पर तुल्य और सब से स्तोक ।

(२) धर्माधर्मास्तिकाय के प्रदेश परस्पर तुल्य असं० गुणा ।

(३) जीव द्रव्य अनन्त गुणा । (४) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा ।

(५) पुद्गल द्रव्य अनन्त गुणा । (६) तस्य प्रदेश असं० गुणा ।

(७) काल द्रव्य अनन्त गुणा । (८) आकाश प्रदेश अनन्त गुणा ।

रत्नप्रभा नारकी की पृच्छा ? (गौतम) कुडजुम्मा प्रदेश अवगाहा है, शेष ३ बोल नहीं, इसी तरह ७ नारकी, १२ देवलोक, ९ ग्रैवेक, ५ अनुत्तर, १ सिद्धशिला और लोक ये ३५ बोलों की व्याख्या करनी के एक कुडजुम्मा प्रदेश अवगाहा है शेष नहीं।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० १३.

श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० ४.

(जीवों का प्रमाण.)

इस थोकड़े में सब जीवों को जुम्मा रासी कर के द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भावा श्री बतावेगे।

(द्रव्य.)

हे भगवान्! एक जीव द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा या कलयुगा है? (गौतम) कलयुगा है, क्योंकि एक जीवा श्री प्रश्न है इस लिए एवं २४ दंडक और सिद्ध के भी एक जीवा श्री कलयुगा ही कहना।

घणा जीवों की अपेक्षा क्या कुडजुम्मा है? यावत् कलयुगा है? (गौतम) घणा जीवों की गणती का दो भेद एक

समुचय दूसरा अलग २, जिस में समुचय की अपेक्षा तो कुडजुम्मा है, शेष ३ भागा नहीं और अलग २ की अपेक्षा कलयुगा है शेष ३भागा नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा ? (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, और अलग २ की अपेक्षा में कलयुगा है शेष ३ बोल नहीं, एव २४ दडक और सिद्ध भी समझलेना।

(प्रदेश)

हे भगवान्! प्रदेशापेक्षा एक जीव क्या कुड जुम्मा है यावत् कलयुगा है? (गौतम) प्रदेश दो प्रकार के हैं, एक जीव प्रदेश और दूसरा शरीर प्रदेश, जिसमें जीव प्रदेश तो कुड जुम्मा है शेष ३ भागा नहीं, और शरीर प्रदेश स्यात् कुड जुम्मा है यावत् कलयुगा है एव २४ दडक भी समझना।

एक सिद्ध के प्रदेश की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नहीं है, और जीव प्रदेश अपेक्षा कुड जुम्मा है, शेष तीन भागा नहीं।

घणा जीवों के प्रदेशा श्री पृच्छा ? (गौतम) जीवापेक्षा समुचय कहो या अलग २ कहो कुड जुम्मा प्रदेश हैं, शेष ३ भाग नहीं और शरीरापेक्षे स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा। और अलग २ अपेक्ष कुड जुम्मा भी यावत् कलयुगा भी घणा। एव नरकादि २४ दडक में भी समझलेना।

घणा सिद्धों की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नहीं है, और जीव प्रदेशापेक्षा समुचय और अलग २ में सब ठिकाणे कुड जुम्मा प्रदेश कहना शेष ३ भांगा नहीं।

(क्षेत्र)

हे भगवान् ! समुचय एक जीव क्या कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाहा है ? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाहा है, एवं २४ दंडक और सिद्ध की भी व्याख्या करनी।

घणा जीव की पृच्छा ? (गौतम) समुचय तो कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है, क्योंकि जीव सर्व लोक में हैं और लोकाकाश भी कुड जुम्मा है, अलग २ की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है, यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है।

घणा नारकी की पृच्छा ? (गौतम) समुचय स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाहा है और अलग २ की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है एवं एकेन्द्री वर्ज के यावत् वैमानिक और सिद्धों की व्याख्या करनी और एकेन्द्री समुचय जीववत् कहना।

(काल)

हे भगवान् ! समुचय एक जीव क्या कुड जुम्मा समय स्थिति वाला है यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है ? (गौतम) कुड जुम्मा स्थिती वाला है, क्योंकि काल का समय कुड जुम्मा है और जीव सब काल में शाश्वता है।

एक नारकी के नेरिये की पृच्छा ! (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति का है एव २४ दंडक और सिद्ध समुचय जीव की माफिक समझना।

घणा जीव की पृच्छा ! (गौतम) समुचय और अलग २ कुड जुम्मा समय की स्थिति वाले है शेष बोल नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा ! (गौतम) समुचय स्यात कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाले हैं और अलग २ अपेक्षा कुड जुम्मा घणा यावत् घणा कलयुगा समय की स्थिति वाला है एव २४ दडक और सिद्ध समुचयवत्।

(भाव)

हे भगवान ! समुचय एक जीव काला गुण पर्यायापेक्षा क्या कुड जुम्मा यावत् कलयुगा है ? (गौतम) जीव, प्रदेशा श्री वर्णादि नहीं है, और शरीर प्रदेशापेक्षा स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा पर्याय वाला है, एव २४ दडक सिद्धों के शरीर नहीं।

समुचय घणा जीव की पृच्छा ! (गौतम) जीव प्रदेशापेक्षा नहीं और शरीरापेक्षा स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा पर्याय वाला है, एव २४ दटक भी समझ लेना और काले वर्ण की व्याख्या के माफिक शेष वर्ण, गंध, रस, स्पर्श २० बोल की व्याख्या करदेनी।

(ज्ञान)

हे भगवान् ! समुचय एक जीव मतिज्ञान की पर्यायापेक्षा क्या कुड जुम्मा है, यावत् कलयुगा है ? (गौतम) स्यात् कुड

जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, एवं एकेन्द्री वर्ज के शेष १६ दंडक समझ लेना। एकेन्द्री में मतिज्ञान नहीं है और इसी तरह घणा जीवोंपेक्षा समुचय और अलग २ की व्याख्या भी कर-देनी, एवं श्रुतज्ञान भी समझना और अवधी ज्ञान की व्याख्या भी इसी तरह करदेना परन्तु १६ दंडक की जगह १६ दंडक कहना क्योंकि पांच स्थावर के सिवाय तीन विकलेन्द्री में भी अवधी ज्ञान नहीं होता और मनः पर्यव ज्ञान की भी व्याख्या मतिज्ञानवत् करनी परन्तु मनुष्य दंडक सिवाय अन्य दंडक में मनः पर्यव ज्ञान नहीं है, इस लिये एक ही दंडक कहना।

केवल ज्ञान की पृच्छा ? (गौतम) कुड जुम्मा पर्याय है शेष तीन बोल नहीं एवं घणा जीव समुचय और अलग २ की भी व्याख्या करदेनी।

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान में २४ दंडक और विभंग ज्ञान में १६ दंडक चक्षुदर्शन में १७ दंडक, अचक्षुदर्शन में २४ दंडक और अवधी दर्शन में १६ दंडक इन सब की व्याख्या मतिज्ञानवत् समझनी, और केवल दर्शन केवल ज्ञान की माफिक। यह थोकड़ा खूब दीर्घदृष्टि से विचारने लायक है, धर्म ध्यान इसी को कहते है, द्रव्यानुयोग में उपयोग की तिव्रता होने से कर्मों की बड़ी भारी निर्जरा होती है, इस लिये मोक्षाभिलाषियों को हमेशा इस बात की गवेषणा करनी चाहिये। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० १४.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४

(जीव कपाकप)

हे भगवान् ! समुच्चय जीव क्या कपायमान हे या अ-कप है ? (गौतम) जीव दो प्रकार के हैं एक सिद्ध के और दूसरे संसारी जिसमें सिद्ध के जीव दो प्रकार के ह, एक अणतर (जो एक समय का) सिद्धा और दूसरा परपर (बहुत समय का) सिद्धा, जो परम्पर सिद्ध है वे अकप हैं और अणतर सिद्ध है वे कपायमान हे अगर कपायमान हे तो क्या देश (एक हिस्सा) कपायमान हैं या सर्व कपायमान हैं ? देश कपायमान नहीं है किन्तु सर्व कपायमान हैं क्योंकि मोक्ष जाता हुआ जीव रस्ते में सर्व प्रदेशों से चलता है।

ससारी जीव दो प्रकार के हैं एक शैलेस प्रतिपन्न (चोदवें गुण स्थानवर्ती) और दूसरा अशैलेस (पहिले से तेरे गुण स्थान तक का) जिस में शैलेस प्रतिपन्न है वह अकप है, और अशैलेस है वह कपायमान है ? अगर कपायमान है तो क्या देश कपायमान है या सर्व कपायमान है, देश कपायमान भी है और सर्व कपायमान भी है जसे हाथ हिलाना यह देश कपाय-मान या आत्म सर्व प्रदेशों से गती आगती करता है सो सर्व है।

नारकी के नेरियों की पृच्छा ? (गौतम) देशकम्प भी है, और सर्व कम्पी भी है कारण नारकी दो प्रकार के हैं, एक परभव

गमन गतीवाले और दूसरे वर्तमान भवस्थित देशकंप हैं, इसी माफिक भुवनपति १० स्थावर,५ विकलेन्द्री,१ मनुष्य, १ व्यंतर, १ जोतिषी और वैमानिक भी समझलेना। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम्।

थोकड़ा नं० १५.

श्रीभगवती सूत्र श० २५ उ०-४.

(पुद्गलों की अल्पायहुत्व.)

पुद्गल परमाणु और संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी अनन्त प्रदेशी स्कंध इनकी द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य प्रदेश की अल्पा वहुत्व कहते है—

(१) सबसे थोड़ा अनन्त प्रदेशी स्कंध।
(२) परमाणु पुद्गल का द्रव्य अनन्त गुणा।
(३) संख्यातप्रदेशी का द्रव्य संख्यात गुणा।
(४) असंख्यातप्रदेशी का द्रव्य असंख्यात गुणा।

प्रदेशापेक्षा भी अल्पावहुत्व इसी माफिक (द्रव्यवत्) समझलेना।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पावहुत्व.)

(१) सब से थोड़ा अनन्तप्रदेशी स्कंध का द्रव्य।
(२) तस्य प्रदेश अनंत गुणा।

(३) परमाणु पुद्गल का द्रव्य प्रदेश अनंत गुणा ।
(४) संख्यात प्रदेशी स्कंध का द्रव्य संख्यात गुणा ।
(५) तस्य प्रदेश संख्यात गुणा ।
(६) असंख्यात प्रदेश स्कंध का द्रव्य असंख्यात गुणा ।
(७) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा ।

(क्षेत्र)

(१) सब से थोड़ा एक आकाश प्रदेश अवगाहा द्रव्य ।
(२) संख्यात प्रदेश अवगाहा द्रव्य संख्यात गुणा
(३) असंख्यात प्रदेश अवगाहा द्रव्य असंख्यात गुणा ।

इसी माफिक प्रदेश की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना ।

(१) सब से थोड़ा एक प्रदेश अवगाहा द्रव्य और प्रदेश ।
(२) संख्यात प्रदेश अवगाहा द्रव्य संख्यात गुणा ।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणा ।
(४) असंख्यात प्रदेश अवगाहा द्रव्य असंख्यात गुणा ।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा ।

(काल)

(१) सब से थोड़ा एक समय की स्थिति का द्रव्य ।
(२) संख्यात समय स्थिति का द्रव्य संख्यात गुणा ।
(३) असंख्यात समय स्थिति का द्रव्य असंख्यात गुणा ।

इसी माफिक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना ।

(१) सब से थोड़ा एक समय की स्थिति का द्रव्य और प्रदेश ।

(२) संख्यात समय की स्थिति का द्रव्य संख्यात गुणा।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणा।
(४) असंख्यात समय की स्थिति का द्रव्य असंख्यात गुणा।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा।

(भाव.)

(१) सब से थोड़ा अनन्त गुण काले पुद्गलों का द्रव्य।
(२) एक गुण काला पुद्गल द्रव्य अनन्त गुणा।
(३) संख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य संख्यात गुणा।
(४) असंख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य असंख्यात गुणा।

इसी माफिक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझलेनी।

(१) सब से थोड़ा अनंत गुण काले का द्रव्य।
(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणा।
(३) एक गुण काला द्रव्य और प्रदेश अनन्त गुणा।
(४) संख्यात प्रदेश काले० पु० द्रव्य सं० गुण।
(५) तस्य प्रदेश संख्यात गुणा।
(६) असं० प्रदेश काले० पु० द्रव्य असंख्यात गुणा।
(७) तस्य प्रदेश असं० गुणा।

इसी माफिक ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, ऊष्ण, स्निग्ध, लुक्ष,) एवं १६ बोलों की व्याख्या काले वर्णवत् तीन अल्पाबहुत्व करनी।

(कक्खड स्पर्श की अल्पाबहुत्व)

(१) सब से थोड़ा एक गुण कक्ड़ा का द्रव्य।

(२) स० गु० फरसा द्रव्य स० गु० ।
(३) अस० गु० फरसा द्रव्य अस० गु० ।
(४) अनन्त गुणा फरसा द्रव्य अनंत गुणा ।

(प्रदेश)

(१) सबसे थोड़ा एक गुण फरसा का प्रदेश ।
(२) सं० गुणा फरसा का प्रदेश अस० गुणा ।
(३) अस० गुणा फरसा का प्रदेश असं० गुणा ।
(४) अनंत गुणा फरसा का प्रदेश अनंत गुणा ।

(द्रव्य और प्रदेश)

(१) सबसे थोड़ा एक गुण फरसा का द्रव्य प्रदेश ।
(२) सं० गुणा फरसा पुद्गल द्रव्य सं० गुणा ।
(३) तस्य प्रदेश असं० गुणा ।
(४) असं० गुणा फरसा पुद्गल द्रव्य असं० गुणा ।
(५) तस्य प्रदेश असं० गुणा ।
(६) अनंत गुणा फरसा पुद्गल द्रव्य अनंत गुणा ।
(७) तस्य प्रदेश अनंत गुणा ।

इसी माफिक मृदु, गुरु, लघु भी समझ लेना । कुल ६६ अल्पाबहुत्व हुई । ३ द्रव्य की, ३ क्षेत्र की, ३ काल की, और ६० भाव की ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० १६.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४.

हे भगवान्! एक परमाणु पुद्गल द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है? गौतम! कलयुगा है, शेष तीन भांगा नहीं एवं यावत् अनंत प्रदेशी द्रव्यापेक्षा कलयुगा है।

घणा प्रमाणु पुद्गल की द्रव्यापेक्षा पृच्छा? गौतम! समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा स्यात् चारों भांगा पावे, अलग २ की अपेक्षा केवल कलयुगा शेष ३ भांगा नहीं एवं यावत् अनंत परदेशी समझना।

एक परमाणु पुद्गल प्रदेशापेक्षा पृच्छा? गौतम! कलयुगा है शेष भांगा नहीं।

एक दो प्रदेशी स्कंध की पृच्छा! (गौतम) दावर जुम्मा है, एक तीन प्रदेशी स्कंध तेउगा है, एक चार प्रदेशी स्कंध कुड जुम्मा है, एक पांच प्रदेशी स्कंध कलयुगा है, एक छे प्रदेशी स्कंध दावर जुम्मा है, एक सात प्रदेशी स्कंध तेउगा है, एक आठ प्रदेशी स्कंध कुडजुम्मा है, नव प्रदेशी स्कंध कलयुगा है, दश प्रदेशी स्कंध दावर जुम्मा है, शेष तीन भांगा नहीं, एक संख्यात प्रदेशी स्कंध स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा एवं यावत् एक अनन्त प्रदेशी स्कंध में भी चारों भांगा समझलेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा! (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा है, और अलग २ अपेक्षा कलयुगा है, शेष तीन भांगा नहीं।

घणा दो प्रदेशी स्कंध की पृच्छा? गौतम! समुच्चयापेक्षा स्यात् कुड जुम्मा तथा स्यात् दावर जुम्मा है शेप दो भागा नहीं और अलग २ की अपेक्षा दावर जुम्मा है, शेप तीन भागा नहीं, घणा तीन प्रदेशी स्कंध समुच्चयापेक्ष स्यात् कुडजुम्मादि चारों भागा पावे और अलग २ की अपेक्षा तेउगा है, घणा चार प्रदेशी स्कंध समुच्चयापेक्षा कुडजुम्मा है, और अलग २ की अपेक्षा भी कुडजुम्मा है, शेप ३ भागा नहीं, घणा पाच प्रदेशी स्कंध और घणा नौ प्रदेशी स्कंध की व्याख्या परमाणु पुद्गलवत्, घणा छ प्रदेशी और घणा दश प्रदेशी की व्याख्या दो प्रदेशीवत्, घणा सात प्रदेशी की व्याख्या तीन प्रदेशीवत् और घणा आठ प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् कह देना।

घणा सख्यात प्रदेशी स्कंध की पृच्छा? गौतम! समुच्चयापेक्षा स्यात् चारों भागा पावे। और अलग २ की अपेक्षा भी चारों भागा पावे। कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एव असंख्यात् प्रदेशी और अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना।

(क्षेत्र)

हे भगवान्! एक परमाणु पुद्गल क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह है? गौतम! कलयुगा प्रदेश अवगाह है शेप ३ भागा नहीं।

एक दो प्रदेशी स्कंध की पृच्छा? गौतम! स्यात् दावर जुम्मा स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाह है शेप दो भागा नहीं। एक तीन प्रदेशी स्कंध स्यात् तेउगा, दावर जुम्मा और कल

युगा प्रदेश अवगाह है, कुडजुम्मा नहीं। एक चार प्रदेशी स्कंध स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह है। एवं यावत् पांच, छः, सात, आठ, नौ, दश प्रदेशी संखयात् असंख्यात् और अनंत प्रदेशी भी स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा अवगाहा है।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा? गौतम! समुचय कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है। कारण परमाणु सर्व लोक में है। अलग २ की अपेक्षा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है।

घणा दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा? गौतम! समुचय कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है और अलग २ की अपेक्षा घणा दावर जुम्मा घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है। शेष दो भांगा नहीं। घणा तीन प्रदेशी स्कन्ध समुचय की अपेक्षा कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है। अलग २ की अपेक्षा घणा तेउगा दावर जुम्मा और कलयुगा प्रदेश अवगाहा है। शेष कुड जुम्मा नहीं। घणा चार प्रदेशी स्कन्ध समुचय की अपेक्षा कुड जुम्मा प्रदेश अवगाहा है। अलग २ की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है एवं पांच प्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् करनी।

(काल).

हे भगवान्! एक परमाणु पुद्गल क्या कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है? गौतम! स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है एवं दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? गौतम ! समुच्चय स्यात् कुड जुम्मा यावत् कल्युगा समय स्थिति का है एवं अलग २ की अपेक्षा भी घणा कुड जुम्मा यावत् कल्युगा समय स्थिति का है इसी माफक दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

(भाव)

हे भगवान् ! एक परमाणु पु० कालावर्ण की पर्याया क्या कुड जुम्मा प्रदेशी है यावत कल्युगा प्रदेशी है ? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् कल्युगा प्रदेशी है एवं दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना, घणा परमाणु की पृच्छा ? (गौतम) समुच्चय स्यात् कुड जुम्मा यावत कल्युगा प्रदेशी है, अलग २ की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा यावत कल्युगा प्रदेशी है एवं दो तीन यावत अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या करनी, जैसे काले वर्ण का कहा इसी तरह शेष ४ वर्ण, २ गंध ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध, लुक्ष,) एवं १६ बोल समझ लेना।

एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कर्कश स्पर्शकी पर्याय क्या कुड जुम्मा प्रदेशी यावत कल्युगा प्रदेशी है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कल्युगा प्रदेशी है एवं घणा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समुच्चयापेक्षा स्यात् पावे [illegible] और अलग २ अपेक्षा भी पावें (कुड जुम्मा भी घणा यावत् कल्युगा भी घणा पावे) एवं मृदु, गुरु, लघु की भी व्याख्या करनी। ये चार स्पर्श बादर [illegible] [illegible], [illegible] प्रदेशी, नहीं होते किन्तु [illegible]

प्रदेशी ही होते है क्योंकि ये चार स्पर्श बादर स्कंध में होते है जहां ये चार स्पर्श हैं वहां पूर्व कहे चार स्पर्श नियमा हैं, यह थोकड़ा दीर्घ दृष्टि से विचारने योग्य है।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० १७.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४.

(परमाणु).

हे भगवान्! परमाणु पुद्गल क्या कम्पायमान है के अकम्प है? गौतम! स्यात् कम्पायमान है स्यात् अकम्प है एवं दो यावत् दश प्रदेशी तथा संख्यात् असंख्यात् और अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा? गौतम! कम्पायमान भी घणा और अकम्प भी घणा इसी तरह घणा दो तीन प्रदेशी यावत घणा अनन्त प्रदेशी स्कंन्ध भी समझ लेना।

एक परमाणु पुद्गल कम्पायमान रहे तो कितने काल तक और अकम्प रहे तो कितने काल तक रहे? गौतम! कम्पायमान रहे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलीका के असंख्यात में भाग और अकम्प रहे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्याता काल एवं दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल कम्पायमान तथा अकम्प की पृच्छा? गौतम! सदा काल सास्वता एवं दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कंध समझ लेना।

एक परमाणु पुद्गल कम्पायमान तथा अकम्प का अन्तर पड़े तो कितने काल का? गौतम! कम्पमान का स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असंख्याता काल और परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असंख्यात काल और अकम्प का स्वस्थाना पेक्षा ज० एक समय उ० असंख्याता काल क्योंकि दो आदि प्रदेश में आकर रहे तो असं० काल तक रहे।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा? गौतम! कम्पमान का स्वस्थान अन्तर ज० एक समय उ० असं० काल परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल क्योंकि जो परमाणु अलग हुवा है वही परमाणु अनन्त काल के पीछे अवश्य आकर मिलता है। उत्कृष्ट अनन्त काल तक अलग रहे और अकम्प की स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० आवलीका के असं० भाग परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल एवं तीन, चार यावत अनन्त प्रदेशी स्कन्ध समझ लेना।

घणा दो प्रदेशी तीन प्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अन्तर नहीं क्योंकि बहुवचन होने से कम्पायमान और अकम्प सास्वते होते हैं।

है एवं तीन चार यावत् अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या इसी तरह करनी।

घणा परमाणु की पृच्छा? गौतम! देश कम्प नहीं है सर्व कम्प घणा और अकम्प भी घणा है और घणा दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प भी घणा, सर्व कम्प भी घणा और अकम्प भी घणा इसी तरह घणा तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

हे भगवान्! एक परमाणु पु० सर्व कम्प और अकम्प पने रहे तो कितने काल तक रहे? गौतम! कम्पायमान रहे तो ज० एक समय उ० आवलीका के असंख्यात में भाग जितना काल और अकम्प रहे तो ज० एक समय उ० असं० काल० तथा दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्पायमान और सर्व कम्पायमान पने रहे तो ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग जितना काल और अकम्प पने रहे तो ज० एक समय उ० असं० काल एवं तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना और घणा परमाणु, दो प्रदेशी, तीन प्रदेशी यावत् घणा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध सर्वकम्प, देश कम्प और अकम्प सर्वाद्धा याने सास्वता है।

एक परमाणु पु० के सर्वकम्प और अकम्प का अन्तर कितना है? गौतम० कम्पायमान स्वस्थाना श्री ज० एक समय उ० असं० काल एवं परस्थाना श्री भी समझना और अकम्प की स्वस्था श्री ज० एक समय उ० आवली का के असं०,

भाग और अन्यथा भी ज० एक समय उ० असं० काल भावना पूर्ववत् क्योंकि द्विप्रदेशादि स्कन्ध की स्थिती असंख्याता काल की है।

द्वि प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प, सर्व कम्प और अकम्प का अन्तर ज० तो सबका एक समय है और उत्कृष्ट देश कम्प और सर्व कम्प का स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असं० काल और परस्थान आश्री अनन्त काल क्योंकि वे दो प्रदेश अलग २ होकर दूसरे स्कन्धों में जा मिले तो उ० अनन्ता काल तक अलग रहकर फिर वहीं के प्रदेश दो प्रदेशी स्कन्ध बने मिले तो उ० अनन्त काल में मिले और अकम्प का अन्तर स्वस्थापेक्षा उ० आवली का के असं० भाग और पर स्थानापेक्षा अनन्त काल भावना पूर्ववत् एवं तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की भी व्याख्या कर देनी।

घणा परमाणु पु० दो प्रदेशी स्कन्ध, तीन प्र० चार प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के देश कम्प, सर्वकम्प और अकम्प का अन्तर नहीं है कारण सर्व काल में तीनों प्रकार के पुद्गल शाश्वते है।

(अल्पा बहुत्व)

(१) सबसे स्तोक सर्व कम्पायमान परमाणु पु०।
(२) अकम्प परमाणु पु० असं० गुणा।
(३) सबसे स्तोक दो प्रदेशी स्कन्ध सर्व कम्प।
(४) दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प असं० गु०।
(५) „ „ अकम्प असं० गु० एवं तीन

तीन यावत् असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की भी
अल्पा० दो प्रदेशीवत् अलग २ लगा लेना।

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० स्कन्ध सर्व कम्प।
(२) अकम्प अनन्त प्र० स्कन्ध अनन्त गुणा।
(३) देशकम्प ,, ,, अनन्त गुणा।

(द्रव्य).

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का सर्वकम्प द्रव्य.
(२) अनं० प्र० अकम्प का द्रव्य अनन्त गुणा।
(३) ,, ,, देशकम्प० ,, अनं० गु०।
(४) असं० प्र० सर्वकम्प० ,, अनं० गु०।
(५) सं० प्र० ,, ,, असं० गु०।
(६) परमाणु पु० ,, ,, असं० गु०।
(७) सं० प्र० देशकम्प० ,, असं० गु०।
(८) असं० प्र० ,, ,, असं० गु०।
(९) परमाणु पु० अकम्प० ,, असं० गु०।
(१०) सं० प्र० ,, ,, सं० गु०।
(११) असं० प्र० ,, ,, असं० गु०।

इसी तरह प्रदेश की भी अल्पा० समझलेना परन्तु परमाणु को अप्रदेशी और १० में बोल में संख्यात प्रदेशी अकम्प प्र० असं० गुणा कहना।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पाबहुत्व.)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० सर्व कम्पका द्रव्य।

(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणा ।
(३) अन० प्र० अकम्प द्रव्य अन० गुणा ।
(४) तस्य प्र० अन० गुणा ।
(५) अन० प्र० देशकम्प द्रव्य अन० गुणा ।
(६) तस्य प्र० अनन्त गुणा ।
(७) असं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य अ० गु० ।
(८) तस्य प्र० असंख्यात गुणा ।
(९) सं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य असं० गु० ।
(१०) तस्य प्र० संख्यात गुणा ।
(११) परमाणु पु० सर्वकम्प० द्रव्य प्र० असं० गु० ।
(१२) सं० प्र० देशकम्प० द्रव्य असं० गु० ।
(१३) तस्य प्र० संख्यात गुणा ।
(१४) असं० प्र० देशकम्प द्रव्य असं० गु० ।
(१५) तस्य प्रदेश असं० गु० ।
(१६) परमाणु पु० अकम्प० द्रव्य प्रदेश असं० गु०
(१७) सं० प्र० अकम्प द्रव्य सं० गु० ।
(१८) तस्य प्रदेश सं० गु० ।
(१९) असं० प्र० अकम्प द्रव्य असं० गु० ।
(२०) तस्य प्रदेश असं० गु० ।

यह थोकड़ा खूब दीर्घ दृष्टि से विचारने योग्य है ।

सेवन्ते भन्ते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० १६.

श्रीभगवती सूत्र श० ८ उ०-१.

(पुद्गल)

सर्व लोक में पुद्गल तीन प्रकार के है, प्रयोगशा. मिश्रशा और विशेषा ।

दोहा–जीव गृह्याते प्रयोगशा मिशा जीवा रहित् ।
विषेशा हाथ आवे नहीं ज्ञानी भाष्या ते तहत् ॥

प्रयोगशा–जीव ने जो पुद्गल शरीरादि पने गृहण किया वह ।
मिश्रशा–जीव शरीरादि पने गृहण करके छोडेहुवे पुद्गल ।
विशेषा–शीतोष्णादि पने जो स्वभाव से प्रणम्या पुद्गल ।

अब इन पुद्गलों का शास्त्रकार अलग २ भेद करके बतलाते है, प्रयोगशा पु० का नव दंडक कहते हैं जिसमें पहिले दंडक में जीव के ८१ भेद हैं, यथा- सात नारकी, रत्नप्रभा. शर्करप्रभा, वालुप्रभा. पंकप्रभा, धूमप्रभा. तमप्रभा, तमःतमप्रभा, १० भुवनपति-असुरकुमार, नागकु० सुवर्णकु० विद्युतकु० अग्निकु० द्वीपकु० दिशाकु० उदधिकु० वायुकु० स्तनित्कुमार ८ व्यंतर-पिशाच, भूत, जक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व, ५ ज्योतिषी-चन्द्र, सूर्य ग्रह, नक्षत्र, तारा, १२ देवलोक-सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, महेन्द्र, ब्रह्म, लांतक, महाशुक्र संस्तार आणात् प्रणात् अरण अच्युत. ग्रैवेक-भद्र, सुभद्र, सुजया, सुमाणसा, सुदर्शना, प्रयदर्शना, अमोय, सुपडिबन्धा, यशो-

धरा ५ अनुत्तर वैमान विजय, विजयत, जयत, अपराजित सर्वार्थ सिद्ध ५ सुक्ष्म पृथ्वीकाय, अप्यकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय एवं ५ वादरकाय-पृथ्वी कायादि ३ विकलेंद्री बेरिंद्री तेरिंद्री चौरिन्द्री, ५ असन्नीत्रियच, जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपरी भुजपरी, एवं ५ सन्नी त्रियच जलचरादि० दो मनुष्य गर्भज और समुत्सम यह पहिले दडके ८१ भेद, और दूसरे दडक में पूर्ववत् ८१ भेद अपर्याप्ताका और ८० भेद पर्याप्ताका क्यों-, कि समुत्सम मनुष्य पर्याप्ता नहीं होते एव ८१ ८० मिलके १६१ भेद दूसरे दडकका १६१ बोल हुवा। अब तीसरे दडक का ४९१ भेद कहते हैं यथा दूसरे दडक मे जो १६१ बोल कहे हैं जिसमें तीन ३ शरीर सब मे पावे कारण नारकी देवता में वैक्रिय, तेजस, कार्मण शरीर है और मनुष्य त्रियंच में औदारिक, तेजस कार्मण है इसलिये १६१ को तीन गुणा करने से ४८३ भेद हुवे तथा वायुकाय और ५ सन्नी त्रियच में शरीर पावे चार ४ जिसमें तीन ३ पहिले गणचुके शेष ६ बोलों के ६ शरीर और मनुष्य में ५ शरीर है जिसमें ३ पहिले गण चुके शेष २ मनुष्य के और ६ वायु त्रियच के एव ८ मिलाने से ४९१ भेद तीजे दडक का हुवा।

(४) चौथे दडक में जीवों की इन्द्रियों के ७१३ भेद यथा दूसरे दंडक में १६१ भेद कह आये हैं जिसमे एकेन्द्री के २० बोलों में २० इन्द्री विकलेन्द्री के ६ बोलों मे १८ इन्द्री शेष १३५ बोलों मे पाच ५ इन्द्री गणने से ६७५ इन्द्रीया एव २० १८ ६७५ सब मिलाके ७१३ भेद हुवे।

(५) पांचवे दंडक में शरीर की इन्द्रियां के २१७५ भेद यथा तीसरे दंडक के ४९१ भेद कह आये है जिसमें एकेन्द्री के ६१ शरीर में इन्द्री ६१ है और विकलेंद्री के १८ शरीर में इन्द्री ५४ है शेष ४१२ शरीर पचेन्द्री के हैं, जिसमें २०६० इन्द्रीयां हैं एव ६१-५४-२०६० मिलके कुल २१७५ भेद पांचवें दंडक का हुवा।

(६) छटे दंडक का ४०२५ भेद यथा दूसरे दंडक में १६१ भेद कह आये हैं उनको ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श और ५ संस्थान के साथ गुणा करने से ४०२५ भेद हुवे, क्योंके १६१ बोलों में वर्णादि २५ पचविश बोल पावे है।

(७) सातवें दंडक के ११६३१ भेद यथा तीसरे दंडक में जो ४९१ शरीर कह आये हैं, जिसमें वर्णादि २५ बोल पावे वास्ते वर्णादि २५ बोल से गुणा करने से १२२७५ भेद हुवे, परन्तु ४९१ भेद में १६१ भेद कार्मण शरीर के है और कार्मण शरीर चौफरभी होता है इसलिये १६१ भेद के चार २ स्पर्शकम करने से ६४४ भेद कमती हुवे शेष ११६३१ भेद सातवें दंडक के।

(८) आठवें दंडक के १७८२५ भेद यथा चौथे दंडक में ७१३ जीवों की इन्द्रियां कही है जिसमें वर्णादि २५ पचविश बोलपावे वास्ते ७१३ बोलों को वर्णादि २५ बोल से गुणा करने से १७८२५ भेद आठवें दंडक के हुवे।

(९) नोवे दडक के ५१५२३ भेद यथा पाचवे दडक के २१७५ भेद कहे है, उनको वर्णादि २५ बोल से गुणा करने से ५४३७५ भेद हुवे परन्तु एक २ इन्द्री में एक २ कार्मण शरीर है और कार्मण चौस्पर्शी है, इसलिये २८५२ बोल कम करने से शेप ५१५२३ भेद नोवें दडक के हुवे एव नवों दडक के ८१-१६१-४२१-७१३-२१७५-४०२५-११६३१-१७-८२५-५१५२३ सब मिलाने मे ८८६२५ भेद हुवे, सो इतने प्रकारके प्रयोगशा पुद्गल प्रणमते हैं पुद्गलों की बडीही विचित्रता हैं, ऐसा जगत् मे कोई जीव नहीं है कि जिसने इन पुद्गलों को ग्रहण न किया हों एकवार नहीं परन्तु अनन्तीवार इसी तरह ग्रहण कर २ के छोडा है जैसे प्रयोगशा के नौ दडक और उनके भेद करके बताये है, उसी माफिक मिश्रशाके भी भेद समझलेना विशेषा पुद्गल वर्ण, गध, रस, स्पर्श, और सस्थान पने प्रणम्या है उसके ५३० भेद हैं वह शीघ्रबोध दूसरे भाग से समझलेना, एव प्रयोगश, मिश्रशा विशेषा के १७७७८० भेद हुवे।

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम्।

थोकडा नं० २०.

श्री भगवती सूत्र श० ८-उ० ९.

(बंध)

वध दो प्रकारके होते है, एक प्रयोगवध जो किसी दूसरेके प्रयोग से होता है, और दूसरा विशेषवध जो स्वभाव से ही होता है।

(१) विशेष बंध के दो भेद—अनादिबंध और सादीबंध जिसमें अनादीबंध के तीन भेद धर्मास्तिकाय का अनादीबंध है एवं अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय का भी इन तीनुं के स्वस्व प्रदेश के साथ अनादिबंध है।

धर्मास्तिकाय का अनादिबंध है वह क्या सर्वबंध है या देश बंध है? गौतम! देशबंध है क्योंकि संकल के माफिक प्रदेश से प्रदेशबंधा हुवा है, एव अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय भी समझलेना।

धर्मास्तिकाय के विशेषाबंध की स्थिति कितनी है? गौतम! सर्वाद्धा याने सदाकाल सास्वता बंध है एवं अधर्मास्ति० आकाशास्ति० भी समझलेना।

सादी विशेषा बंध कितने प्रकारका? गौ० तीन प्रकारका बन्धनापेक्षा, भाजनापेक्षा और परिणामापेक्षा, जिसमें बंधनापेक्षा जैसे दो प्रदेशी, तीन, चार यावत् अनंत प्रदेशी का आपस में बंध हो।

लुक्षसे लुक्ष न बधे स्निग्ध से स्निग्ध नबंधे परन्तु लुक्ष और स्निग्ध संबंध होवे वह भी जघन्य गुण वर्जके जैसे एक गुण लुक्ष और एक गुण स्निग्ध का बंधन होवे परंतु विषम मात्रा जैसे एक गुण लुक्ष और दो स्निग्ध का बंध होवे इसी तरह यावत् अनंत प्रदेशी तक समझलेना, इनकी स्थिती ज० एक समय की उ० असंख्याताकाल०।

भाजनापेक्षा—जैसे किसी भाजन में जूना गुल तथा तदूल मद्रादि गालने से उनका स्वभाव से वध हो, इनकी स्थिती ज० एक समय उ० सख्या० कालकी है।

परिमाण वध—जैसे बादल, इन्द्रधनुष, अमोघा, उद्गमच्छादि इनकी स्थिती ज० एक समय उ० छे मास की है।

प्रयोग वध के तीन भेद—अनादि अनत, अनादि शात और सादि शात जिसमें (१) अनादि अनत–जीव के आठ रुचक प्रदेशोंका वध यह भी तीन २ प्रदेश के साथ है, और शेष आत्म प्रदेश हैं वे सादि सात हैं, (२) सादी अनत एक सिद्धों के आत्म प्रदेश स्थित हुवे है वह सादी है परन्तु अन्त नहीं, (३) सादि सातके ४ भेद हैं—आलावणवध, अल्लियावणवध, शरीरवध, और शरीर प्रयोगवध।

आलावणवध—जैसे त्रणके भारे का वध, काष्ट के भारे का वध, एरन पत्र, पलाल, वेली आदि का वध इनकी ज० स्थिती एक समय उ० सख्याता काल०।

अल्लियावणवध के ४ भेद—लेसणा वध, उच्चयवध, समुच्चयवध, और साधारणवध, जिसमें लेसाणवध जैसे कादेसे, चूनेसे, लाखसे, मैणसे, पत्थर तथा काष्टादि को जोड़कर घर प्रासाद आदि बनाना इसकी स्थिती ज० अनर मुहूर्त उ० सख्याता काल (२) उच्चयवध-जैसे–तृणरासी, काष्टरासी, पत्र रासी तुस, भुस० गोवर रासी का ढेर करने से वध होता है उसकी स्थिती ज० अतर मुहूर्त उ० सख्याता काल- (३)

समुचयवंध-जैसे-तालाव, कूवा. नदी, द्रह, वावड़ी, पुष्करणी, देवकुल, सभा, पर्वत, छत्री. गढ़. कोट, किला, घर, रस्ता, चौरस्तादि जिनकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याताका-लकी है. (४) साधारणबंध-जिसके दो भेद—देसबंध जैसे-गाडा, गाडली, पीलाण, अम्बाडी, पिलग. खुरसी. आदि और दूसरा सर्वबंध जैसे पाणी दूध इत्यादि इनकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याताकाल।

शरीरबंध के दो भेद—पूर्व प्रयोगापेक्षा और वर्तमान प्रयोगापेक्षा जिस में पूर्व प्रयोग जैसे नरकादि सर्व संसारी जीवों के जैसा २ कारण हो वैसा २ बंध होता है और वर्तमान प्रयोग बंध जैसे केवली समुदघात से निवृत्त होता हुवा अन्तरा और मथनमें प्रवृत्तमान तेजस और कारमाण का बन्धक होवे, कारण उस वक्त केवल प्रदेशही होते है।

शरीर प्रयोग बन्धके ५ भेद जैसे औदारिक शरीर प्रयोग बंध, वैक्रिय० आहारक० तेजस० और कारमाण शरीर प्रयोगबंध इनकी स्थिती सविस्तार आगे के थोकड़े में कहे गे।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० २१.

श्री भगवती सूत्र श० ८-उ० ६.

(सर्वबंध देशबंध.)

शरीर पांच प्रकार के हैं-औदारिक, वैक्रिय, आहारिक, तेजस, और कार्मण शरीर (१) औदारिक शरीर आठ बोल से

निपजावे-द्रव्य से, वीर्य से, सयोग से, प्रमाद से, भव जोग कर्म आयुष्य, औदारिक शरीर का स्वामी कौन है ? (१) समुच्चय जीव (२) समुच्चय एकेन्द्री (३) पृथ्वीकाय (४) अप (५) तेउ० (६) वाउ० (७) वनास्पति० (८) बेरिन्द्री (९) तेरिन्द्री (१०) चौरिन्द्री (११) त्रियँच पचेंद्री (१२) मनुष्य इन बारह बोलों में सर्व बधका आहार ले वह ज० एक समय का है सर्व बधका अहार जीव जिस योनी में उत्पन्न हो उस योनी में जाके प्रथम समय ग्रहण करता है और वह प्रथम समय का लिया हुआ आहार उमर भर रहता है, जैसे तेलके अदर बडा का दृष्टत

देश बध का आहार--समुचय जीव, समुचय एकेन्द्रिय, वायुकाय तिर्यंच, पचेन्द्री और मनुष्य इन पाच बोलो के जीवों की देश बध के आहार की स्थिति ज० एक समय की भी है कारण ये जीव औदारिक शरीर से वैक्रिय करते है और वैक्रियसे पीछा औदारिक करते हुवे प्रथम समय ही काल करे तो औदारिक के देश बध का एक समय जघन्य बध का हुआ. शेष सात बोलों (४ स्थावर, ३ विक्लेन्द्री) के जीव देश बध ज० क्षुलक भव से तीन समय न्यून कारण दो समय की विग्रह गती और एक समय सर्व बध का एव ३ समय न्यून क्षुलक भव (२५६ आवली) देश बध का आहार करे और १२ बोल के जीवों की उत्कृष्ट देश बधकी स्थिति नीचे प्रमाणे।

समुचय जीव, मनुष्य और त्रियच तीन पल्योपम एक समय न्यून समुचय एकेन्द्री, पृथ्वीकाय २२००० वर्ष एक

समय न्यून, एवं अप्पकाय ७००० वर्ष, तेउ० तीन दिन, वायु ३००० वर्ष, वनस्पति० १०००० वर्ष, बेरिन्द्री १२ वर्ष, तेरिन्द्री ४९ दिन, चोरिन्द्री ६ मास सब में एक समय न्यून समझना क्योंकि एक समय सर्व बंध का आहार ले।

औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर-समुचय औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर ज० एक क्षुलक भव तीन समय न्यून कारण १ समय प्रथम भव में सर्व बंध का आहार किया और दो समय की विग्रह गती की और उ० ३३ सागरोपम पूर्व क्रोड़ वर्ष में एक समय अधिक कारण कोई जीव पूर्व कोड़ी का भव किया उसमें एक समय सर्व बंध का आहार लिया सो पूर्व कोड़ में न्यून हुवा वहां से सातवीं नरक वा सर्वार्थ सिद्ध विमान में ३३ सा० और वहां से २ समय की विग्रह गती करके उत्पन्न हुवा इस वास्ते १ समय अधिक कहा शेष ११ बोलों का स्वकायाश्री सर्व बंध का अन्तर ज० एक क्षुलक भव तीन समय न्यून और उ० अपनी २ स्थिति से एक समय अधिक समझना भावना पूर्ववत्।

देश बंध का स्वकायाश्री अन्तर कहते है-समुचय जीव, समुचय एकेन्द्री, वायुकाय, त्रियंच पंचेन्द्री और मनुष्य इनमें ज० एक समय उ० अन्तर मुहर्त (वैक्रियापेक्षा) शेष ७ बोलों में ज० एक समय उ० ३ समय।

देश बन्ध का परकायाश्री अन्तर-समुचय एकेन्द्री सर्व बंध अन्तर ज० २ क्षुलक भव तीन समय न्यून और देश बंध

का एक क्षुलक भव १ समय अधिक उ० दोनों बोलों को २००० सागर सख्याता वर्षाधिक।

वनस्पतिकाय सर्व बंध का अन्तर—समुच्चय एकेन्द्री सर्व अन्तर ज० एकेन्द्री माफिक उ० असख्याता काल पृथ्वी काय की काय स्थितिवत्—शेष ९ बोल का सर्व बन्धान्तर ज० एकेन्द्री माफिक और उ० अनन्त काल (वनस्पति काल)।

(अल्पा बहुत्व)

(१) सबसे स्तोक औदारिक शरीर के सर्व बधका।
(२) अबधका विशेषा।
(३) देश बधका असं० गुणा।

(वैक्रिय शरीर)

(२) वैक्रिय शरीर ६ कारणों से बन्धता है जिसमें ८ पूर्व औदारिकवत् और नवमा लब्धि वैक्रिय। जिसका स्वामी (१) समुच्चय जीव, (२) नारकी, (३) देवता, (४) वायुकाय, (५) तिर्यंच पचेन्द्री (६) मनुष्य।

समुच्चय वैक्रिय का बंध दो प्रकार का है सर्व बंध और देश बंध जिसमें सर्व बंध की स्थिति ज० एक समय (नारकी प्रथम समय आहार ले वह सर्व बंध है) उत्कृष्ट दो समय (मनुष्य, तिर्यंच औदारिक से वैक्रिय बनाता हुआ प्रथम समय का सर्वबंधक अन्तर करके काल करे और नारकी देवता में जाय, वहां प्रथम समय वैक्रिय का आहार ले इस वास्ते

(२) आहारक शरीर के देश बन्धका संख्यात गुण।
(३) ,, ,, अबंधगा अनन्त गुणा।

(४) तेजस शरीर बंध का स्वामी एकेन्द्री से यावत् पंचेन्द्री है और आठ कारण से बंध होता है औदारिकवत् तेजस शरीर सर्व बंध नहीं होता केवल देशबंध होता है जिसके दो भेद अनादी अनन्त (अभव्यापेक्षा) और अनादि शान्त (भव्यापेक्षा) इन दोनों का अन्तर नहीं है निरन्तर बंध होता है

(१) तेजस शरीर का अबन्धका स्तोक।
(२) और देश बंधका अनन्त गुणा।

(५) कार्मण प्रयोग बंध के आठ भेद- यथा ज्ञानावर्णीय दर्शना०, वेदनी०, मोहनी०, आयुष्य०, नाम०, गोत्र०, अंतराय० इन आठ कर्मों के बंधका ७९ कारण शीघ्रबोध० भाग २ में लिखा है इनका भी देशबंध है सर्वबंध नहीं होता स्थिती तथा अन्तर तेजस शरीर के माफिक समझ लेना अल्पा बहुत्व आयुष्य कर्म छोड के शेष ७ कर्मका तेजस शरीरवत् और आयुष्य का सबसे स्तोक देशबंध का और अबन्ध का संख्यात गुणा।

(पर्सपर बन्ध अबन्ध)

(१) औदारिक शरीर के सर्वबंध का बंधक है वहां वैक्रिय, आहारिक का अबंधक है और तेजस कार्मण का देश बंधक है इसी तरह औदारिक शरीर के देश बंध का भी कह देना।

(२) वैक्रिय शरीर का बंधक है वहां औदारिक आहारिक शरीर का अबंधक है तेजस कार्मण का देशबंधक है इसी तरह वैक्रिय का देशबंध का भी कहना।

(३) आहारिक शरीर का बंधक है वहां औदारिक वैक्रिय का अबंधक है और तेजस कार्मण का देशबंधक है एवं आहारिक शरीर के देश बंध का भी कहना।

(४) तेजस शरीर का देशबंधक है वहां औदारिक शरीर का बंधक भी है और अबंधक भी है यदि बंधक है तो देशबंधक भी है और सर्वबंध भी है एवं आहारिक वैक्रिय शरीर भी समझ लेना कार्मण शरीर नियमा देशबंध है।

(५) कार्मण शरीर की व्याख्या तेजसवत् करना। इति।

(अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक आहारिक शरीर का सर्व बंधका।
(२) आहा० शरीर का देश बंधका सं० गु०।
(३) वैक्रिय ,, सर्व ,, असं० गु०।
(४) ,, ,, देश ,, ,
(५) तेजस कार्मण का अबंधका अनं० गु०।
(६) औदा० शरीर सर्वबंधका अनं० गु०।
(७) ,, ,, अबंधका विशेषा।
(८) ,, ,, देश ,, असं० गु०।
(९) तेजस कार्मण का देश बंधका विशेषा।
(१०) वैक्रिय का अबंधका विशेषा।

(११) आहारिक का अबंधका विशेषा।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम्.

थोकड़ा नं० २२.

श्री भगवती सूत्र श० २८–उ० १०.

(पुद्गल)

हे भगवान्! पुद्गल कितने प्रकार से प्रणमते हैं? गौतम! पांच प्रकार से यथा वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८ और सस्थान ५ एवं २५ बोलों से प्रणमते हैं।

पुद्गलास्तिकाय के एकप्रदेश को क्या एक द्रव्य कहना १ या घणा द्रव्य कहना. २ या एक प्रदेश कहना ३ या घणा प्रदेश कहना ४ या एक द्रव्य एक प्रदेश कहना ५ या एक द्रव्य घणा प्रदेश कहना या घणा द्रव्य एक प्रदेश कहना ७ या घणा द्रव्य घणा प्रदेश कहना? इन ८ भांगा में से एक प्रदेश में दो भांगा पावे (१) एक प्रदेश (२) अपेक्षा से एक द्रव्य भी कहते है।

दो प्रदेशी में पांच भांगा पावे क्रमसर तीन प्रदेशी में सात भांगा पावे क्रमसर चार प्रदेशी में ८ भांगा पावे एवं ५–६–७–८–९–१० संख्याता असंख्याता और अनन्ता प्रदेशी में भी ८–८ भांगा समझ लेना एवं २–५–७–८० सब मिलाके ९४ मांगे हुवे।

हे भगवान्! जीव पुद्गली है के पुद्गल है? गोतम! जीव पुद्गली भी है और पुद्गल भी है क्योंकि जैसे किसी मनुष्य के पास छात्र हो उसको छत्री कहते हैं दंड हो उसको दंडी कहते हैं इसी माफिक जीव ने पूर्व काल में पुद्गल ग्रहण किया था इस वास्ते पु० ग्रहणापेक्षा से जीवको पुद्गल कहते हैं और श्रोत्रेन्द्री, चक्षु०, घाण०, रस० स्पर्शेन्द्री की अपेक्षा से जीव जीव को पुद्गली कहते हैं।

पृथ्व्यादि पांच स्थावर एक स्पर्श की अपेक्षा पुद्गली है और जीव अपेक्षा पुद्गल है।

बेन्द्री के दोइन्द्री, तेन्द्री के तीनइन्द्री, चौन्द्री के चारइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीवापेक्षा से पुद्गल है

नारकी १, भुवनपति १०, तिर्यंच पंचेन्द्री १, मनुष्य १, व्यंतर १, जोतिषी १, वैमानिक एवं १६ दंडक में पांचइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीव की अपेक्षा से पुद्गल है। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० २३.

श्री भगवती सूत्र श० १०-उ० १

(लोक दिशा)

दिशा दश प्रकार की है यथा—

(१) इन्द्रा [पूर्व दिशी], (२) अग्नि [अग्नि कोन] (३) जमा [दक्षिण दिशा], (४) नेरुती [नऋत्त कोन],

(५) वारुणी [पश्चिम दिशा], (६) वायु [वायव कौन], (७) सोमा [उत्तर दिशा], (८) ईसाण [ईशान कौन], (९) विमला [ऊंची दिशा] (१०) तमा [नीची दिशा]।

इन्द्रा (पूर्व दिशा) में क्या जीव है १ जीव का देश है २, प्रदेश है ३, अजीव है ४, अजीव का देश है ५, प्रदेश है ६? गौतम! हां जीव है यावत् अजीव का प्रदेश है जीव है तो क्या एकेन्द्री है बे० ते० चो० प० और अनेंदिया है? हां एकेन्द्री, बेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, पंचेन्द्री और अनेन्द्री ये ६ बोल है इनके देश ६ और प्रदेश ६ एवं १८ बोल हुवे।

अजीव के दो भेद है एक रूपी दूसरा अरूपी जिसमें पूर्व दिशा में रूपी का स्कन्ध है स्कन्ध देश है स्कन्ध प्रदेश है और परमाणु पुद्गल है एवं चार और अरूपी का ७ धर्मास्तिकाय नहीं है परंतु धर्मास्तिकाय का एक देश है और प्रदेश घणा है एवं अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय २ और सातवां काल एवं अजीव ११ और जीव के १८ सर्व मिला के २९ बोल पूर्व दिशा में पावे एवं पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में २९-२९ बोल पावे।

अग्निकौन की पृच्छा? गौ० जीव नहीं है जीव का देश है, यावत् अजीवका प्रदेश है अगर जीवके देश है तो क्या एकेन्द्री के है।

(१) अग्निकोन में नियमा एकेन्द्री का देश है।

(२) घणा एकेन्द्री का घणादेश एक बेन्द्रीको एकदेश

(३)　,,　,,　,,　,, का घणादेश
(४)　,,　,,　,, घणा का घणादेश

(७) एव तीन आलावा तरिन्द्री का १० तीन चौरिंद्री का (१३) पचेन्द्री का (१६) अनेन्द्रियका एव १६ आलाव कहना ।

(प्रदश)

(१) घणा एकेन्द्री का घणा प्रदेश ।
(२)　,,　,,　,, एक बेरिन्द्री घणा प्रदेश ।
(३)　,,　,,　,, घणा बेरिन्द्रीका घणा प्रदेश ।

एव तेरिन्द्रीका दो, चौरिन्द्रीका दो, पचेंद्रीका दो, और अनेंद्रियका दो सर्व ११ अलावा अजीव का दो भेद-रुपी और अरुपी जिसमें रुपी के चार भेद-स्कध, स्कधदेश, स्कध प्रदेश, और परमाणु पुद्गल, दूसरा अरुपी जिसके ६ भेद-धर्मास्तिकाय नहीं है परतु धर्मास्तिकाय का एक देश, और घणा प्रदेश एव अधर्मास्तिकाय देश प्रदेश आकाशास्तिकाय देश, प्रदेश एव अजीव के १० और जीवका २७ सर्व मिलाके ३७ बोल अग्निकौन में पावे एव नैऋत वायकोन ईसान कौन में भी ३७-३७ बोल समझना ।

विमला (ऊर्ध्वदिशी) में जीव के २७ भेद अग्निकौनवत् और अजीव के ११ भेद पूर्व दिशीवत् एवं ३८ बोलें समझना और नीची दिशी में ३७ बोल कहना कालका समय नहीं है ।

(प्र०) ऊंचीदिशी में कालका समय है और नीची में नहीं कहा जिसका क्या कारण? मेरु पर्वत का एक भाग स्फटिक रत्नमय है और नीचे का भाग पाषाण मय है, उपर स्पटिक रत्नवाला भाग में सूर्य की प्रभा पडती है और नीचेका भाग पाषाणमय होने से सूर्य की प्रभाको नहीं खींच सकता इस लिये शास्त्रकार ने वहां समय की विवक्षा नहीं की, और नीची दिशा में अनेन्द्रीया का प्रदेश कहा सो यह केवली समुद्घातकी अपेक्षा से हैं। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० २४.

श्री भगवती सूत्र श० ११-उ० १०

(लोक)

हे भगवान्! लोक कितने प्रकार का है? गौ० चार प्रकार का द्रव्यलोक, क्षेत्रलोक, काललोक और भावलोक जिसमें पहिले क्षेत्रलोक की व्याख्या करते हैं, क्षेत्रलोक तीन प्रकार का है, उर्द्धलोक, अधोलोक और तिर्यग लोक, उर्द्धलोक में १२ देवलोक ९ ग्रैवेक ५ अनुत्तर विमान और सिद्धशिला, अधोलोकमें ७ नारकी और तिरछा लोक में जम्बूद्वीप, लवण समुद्रादा असंख्याद्वीप समुद्र है।

अधोलोक त्रिपाई के सस्थान, तीर्यंग् लोक झालर के सस्थान, ऊर्द्धलोक उभी मृदगाकार (सस्थान) सर्व लोक तीन सरावला के अथवा जामा पहिरे हुवे पुरुष के सस्थान है और अलोक पोला गोला (नारियल) के सस्थान है।

अधोलोक क्षेत्रलोक में जीव है, जीव के देश है, जीवके प्रदेश है एव अजीव, अजीव के देश, अजीव के प्रदेश है। जीव है यावत् अजीव का प्रदेश है अगर जीव हैं तो क्या एकेन्द्री यावत् अनेन्द्री है? हा एकेन्द्री, वेन्द्री, तेन्द्री, चोन्द्री, पचेन्द्री और अनेन्द्री एव ६ बोल और इन छे का देश और छे का प्रदेश सर्व १८ बोल हुवे।

अजीव के दो भेद रुपी और अरुपी जिसमें रुपी के चार भेद पूर्ववत् और अरुपी के ७ भेद धर्मास्ति का देश, प्रदेश एव अधर्मास्ति, आकाशास्ति का भी देश, प्रदेश और काल समय एव २९ बोल अधो लोक में पावे इसी तरह तीर्यंग् लोक में २९ और ऊर्द्ध लोक में काल का समय छोड के शेष २८ बोल पावे।

सर्वलोक में बोल पावे २९ पूर्ववत् और अलोक में जीवादि नहीं है फक्त आकाश है वह भी सर्वाकाश से अनन्त में भाग न्यून (लोक जितना न्यून)।

नीचालोक के एक आकाश प्रदेश पर जीव नहीं है जीव का देश, प्रदेश और अजीव, अजीव देश, प्रदेश है।

(१) घणा एकेन्द्री का घणा देश तो नियमा है।

(२) घणा एकेन्द्री का घणा देश एक बेरिन्द्री का एक देश।
(३) ,, ,, ,, ,, घणा बेन्द्री का घणा देश।

एवं तेन्द्री, चोरिन्द्री, पंचेन्द्री और अनेन्द्री का दो दो बोल कहना एवं ११।

(१) घणा एकेन्द्री का घणा प्रदेश।
(२) घणा एकेन्द्रीका घणा प्रदेश और एक बेन्द्रीका घणा प्रदेश
(३) ,, ,, ,, ,, और घणा ,, ,, ,,

एवं तेन्द्री २ चोन्द्री २ पंचेन्द्री २ एवं ९।

(१) घणा एकेन्द्रीका घणा देश और एक अनेन्द्रीयको एकदेश.
(२) ,, ,, ,, ,, ,, ,, घणा देश।
(३) ,, ,, ,, ,, घणा ,, ,,

एवं ३–९–११ मिलके २३ भांगे हुवे और अजीव के ४ भेद रुपी और पांच अरुपी पूर्ववत् कुल ३२ बोल।

ऊंचालोक के एक आकाश प्रदेश पर काल का समय छोडके शेष ३१ बोल पावे तिरछा लोक में नीचा लोक वत् ३२ बोल एवं लोक के एक आकाश प्रदेश पर भी कहना।

अलोकाकाश पर जीव आदि नहीं है केवल आकाश अगरु लघु पर्याय संयुक्त है।

द्रव्यलोक—नीचे लोक में अनन्ता जीव द्रव्य है अनन्ता अजीव द्रव्य है एवं ऊंचा लोक, तिरछा लोक और सर्व लोक.

अलोक में केवल अजीव वह भी आकाश अनन्त अगर लघु पर्याय संयुक्त है।

काललोक—ऊचा, नीचा, तिरछा और सर्वलोक कोई क्यों नहीं करे नहीं और करसी नहीं एवं तीनों काल में सदा सास्वतो है एवं अलोक।

भावलोक—ऊचा, नीचा, तिरछा और सर्वलोक में अनन्ता वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान का पर्याय है और अनन्ता गुरु लघु और अनन्ता अगरु लघु पर्याय करके संयुक्त है और अलोक में केवल आकाश द्रव्य अगरु लघु संयुक्त है।

इसका ज्यादा खुलासा देखना हो तो श्रीमान् विनय विजयजी महाराज कृत लोक प्रकाश देखो ॥ इति ॥

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं०२५.

श्री भगवती सूत्र श० १६ उ०—८

लोक—लोक के देश और लोक के प्रदेशों का अधिकार आगे लिखा गया है अब लोक के चरमान्त का २१० बोलो में जीवादि ६ पदके कितने २ बोल हैं वह इस थोकड़े द्वारा नीचे लिखते हैं।

समुचय लोक के पूर्व के चरमान्त में क्या (१) जीव, (२) जीवका देश, (३) जीवका प्रदेश, (४) अजीव, (५) अजीवका देश, (६) अजीवका प्रदेश है।

जीव नहीं है जीवका देश है, यावत् अजीवका प्रदेश है

जीव का देश है तो क्या एकेन्द्री, बेन्द्री, तेन्द्री, चोन्द्री, पंचेन्द्री और अनेन्द्रिय का देश है।

(१) घणा एकेन्द्री का घणा देश सूक्ष्म जीवापेक्षा सास्वता लाधे, (२) घणा एकेन्द्री का घणा देश और एक बेन्द्री को एक देश, (३) घणा एकेन्द्री का घणादेश और एक बेन्द्री का घणा देश, (४) घणा एकेन्द्री का घणा देश और घणा बेन्द्री का घणा देश-एवम् तेन्द्री का ३ चोन्द्री का ३ पंचेन्द्री का ३ एवम् (१३) (१४) घणा एकेन्द्री का घणा देश और एक अनेंद्रिय का घणा देश (१५) घणा एकेंद्री का घणा देश और घणा अनेंद्रिय का घणा देश १ प्रदेश का व्याख्या (१६) घणा एकेंद्री का घणा प्रदेश (१७) घणा एकेंद्री का घणा प्रदेश एक बेंद्री का घणा प्रदेश (१८) घणा एकेंद्री का घणा प्रदेश और घणा बेंद्री का घणा प्रदेश एवम् तेंद्री का २ चोंद्री का २ पंचेंद्री का २ अनेंद्रिय का २ एवम् २६ बोल जीव का।

अजीव दो प्रकार के हैं रूपी और अरूपी जिस्में रूपी का ४ भेद (१) स्कन्ध (२) स्कन्धदेश (३) स्कन्ध प्रदेश (४) परमाणु और अरूपी का ६ भेद धर्मास्तिकाय नहीं है संपूर्ण-

पैला परतु (१) धर्मास्तिकाय का २ आकाशास्तिकाय का २ अरूपी का ६ और रूपी का ४ मिलके अजीव का १० भेद तथा जीवका २६ सब मिलाकर पूर्व दिशा के चरमांत में ३६ बोल हुए एवम्, दक्षिण पश्चिम और उत्तर दिशा भी समझना।

ऊपरवत् ७ नारकी १२ देवलोक ९ नवग्रैवेयक ५ अणुत्तरविमान १ इस प्रकारो पृथिवी (सिद्धशिला) एवम् ३४ बोल के चार दिशो के चरमांत में तथा समुच्चय लोक के चार दिशो के चरमांत मिलके १४० चरमांत में बोल छत्तीस छत्तीस पावे।

ऊंचेलोक के चरमान्त की पृच्छा—ऊंचेलोक के चरमान्त में (१) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का देश सदा काल साश्वता है (२) एकेन्द्री और अनेन्द्रिय का घणा देश और एक बेन्द्री का एक देश (३) और घणा बेन्द्री का घणा देश एवम् तेन्द्री का २, चोन्द्री का २, पचेन्द्री का २, मिलकर ६ बोल तथा प्रदेश (१) एकेन्द्री और अनेन्द्रिय का घणा प्रदेश (साश्वता) (११) एकेन्द्री अनेन्द्रिय का घणा प्रदेश और एक बेन्द्री का घणा प्रदेश (१२) घणा बेन्द्री का घणा प्रदेश एवम् २ तेन्द्री का, २ चोन्द्री का, २ पचेन्द्री का, मिलकर १८ भेद हुवा और अजीव का १० भेद हैं रूपी का स्कन्ध, स्कन्ध देश, स्कन्ध प्रदेश, परमाणु पुद्गल और अरूपी का धर्मास्तिकाय देश, प्रदेश अधर्मास्तिकाय देश, प्रदेश, आकाशास्तिकाय देश, प्रदेश, एवम् सर्व मिलाकर ऊंचेलोक के चरमान्त में बोल २८ पावे।

नीचेलोक के चरमान्त की पृच्छा बोल ३२ पावे यथा घणा एकेन्द्री का घणा देश, एक बेन्द्री को एक देश, घणा बेंद्री का घणा देश, एवम् तेन्द्री २ चोन्द्री २ पंचन्द्री २ अनेन्द्रिय२ मिल कर ११ प्रदेश-घणा एकेन्द्री का घणा प्रदेश एक बेन्द्री का घणा प्रदेश घणा बेन्द्री का घणा प्रदेश एवम् तेन्द्री का २, चोन्द्री का २, पंचेन्द्री का २, अनेन्द्रिय का २, मिलाकर ११ अजीवका १० पूर्ववत् सर्व ३२ इसी माफिक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान एक इसी प्रभा (सिद्धशिला) का इण १५ के ऊंचे तथा नीचे ३० चरमान्त समझना।

रत्न प्रभा के ऊपर के चरमान्त की पृच्छा जैसे नीचला दिशा में बोल ३८ समझना रत्न प्रभा को वर्ज के नारकी के उपर के और सातों नारकी के नीचे के चरमान्त और १२ देवलोक के नीचे ऊंचे के २४ चरमान्त एवम् ७ नार मांत में बोल पावे ३३ जिसमें जीव के देश के १२ एक-पंचेंद्री का घणा देश भी लेणा प्रदेश का ११ अजीव का १०।

लोक के पूर्व का चरमांत का परमाणु पुद्गल क्या एक समय में लोक के पश्चिम के चरमांत तक जा सके ? हां गौतम पूर्व के चरमांत का परमाणु एक समय में पश्चिम के चरमांत में जा सक्ता है एवम् पश्चिम से पूर्व, दक्षिण से उत्तर, उत्तर से दक्षिण तथा ऊंचेलोक के चरमांत से नीचेलोक के चरमांत और नीचेलोक के चरमांत से ऊंचेलोक के चरमांत तक एक समय में जा सकता है जिस परमाणु में तीव्र वर्ण गंध, रस, स्पर्श होता है वह परमाणु एक समय में १४ राज लोक तक जा सक्ता है। इति।

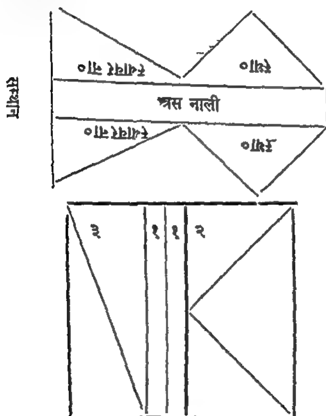
सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० २६.

श्री भगवती सूत्र श० ११ उ० १०

(लोक)

हे भगवान् ! लोक कितना बडा है ? गौतम ! चौदह राज का है।



घन चौतरा.

यह सातराज लम्बा चौड़ा चौतरा है जिसके मध्य भाग से नाप लेने के लिये कोई देवता महान् ऋद्धि, ज्योति, कान्ती

और महा सुख मोटे भाग्य का धणी जिसके चलने की मर्जी कैसी है वह कहते है।

जम्बूद्वीप एकलक्ष योजन का लम्बा चौडा है जिसके मध्य भाग में मेरु पर्वत् एक लक्ष योजन का ऊंचा है उस मेरु पर्वत से चौतर्फ जम्बूद्वीप के ४ दरवाजे पैंतालीस २ हजार योजन की दूर है मेरु पर्वत् की चूलका पर पूर्वोक्त ऋद्धि वाले छे देवता खडे है उस वक्त चार देवीयां जम्बूद्वीप के चारों दरवाजे पर लवण समुद्रकी तर्फ मुह करके हाथ में एक २ मोदक का लड्डू लिये खड़ी है ये दरवाजे सम धरती से ८ योजन ऊंची है वहां से उन लड्डूओं को वे देवीयां सनकाल छोड़े और देवीयों के हाथ मे लड्डू छूटते ही उन छओं देवता में से एक देवता निकले और ऐसा शीघ्र गती से चले कि उन चारों लड्डूवों को अधर हाथ में लेले याने ज़मीन पर न गिरने दे, ऐसी शीघ्र गती वाले वे छेओं देवता लोकका नाप (अन्त) लेनेको जावे, और उसी समय किसी साहूकार के एक हज़ार वर्षकी आयुष्य वाला पुत्र जन्मा, गौतम स्वामी प्रश्न करते है कि हे भगवान्! उस पुत्र के माता पिता काल धर्म प्राप्त हो-गये इतने काल में वे छेओं दिशी का अंत लेके आवे? गौ० नहीं तो क्या वह लड़का सम्पूर्ण आयुष्य पूर्ण करे तब वे देवता अंत लेकर आवे? गौ नहीं तो उसके हाड, नाम, गोत्र विच्छेद होजाय इतना काल वितीत होने से वे देवता लोक का अन्त लेके आवे? गौ० नहीं।

हे भगवान् ! ऐसी शीघ्र गती वाले देवता भी इतने काल तक चले तो गतक्षेत्र ज्यादा है या शेष रहा क्षेत्र ज्यादा है ? गो० गत क्षेत्र ज्यादा है और शेष रहा क्षेत्र कम है शेष रहे हुवे क्षेत्र से गतक्षेत्र असंख्यात गुणा है और गत क्षेत्र से शेष रहा क्षेत्र असंख्यात में भाग है।

अलोक की पृच्छा ! लोक के स्वरूपवत् कहना विशेष इतना है कि समयक्षेत्र ४५ लक्ष योजन का है जिसकी मर्यादा के लिये चौतर्फ मनुष्योत्तर पर्वत है और मध्य भाग में मेरु पर्वत है उसपर दश देवता महर्द्धिक बैठे है और आठ देवी मनुष्योत्तर पर्वत से मोदक के लड्डू छोडे और शीघ्र गतीवाला देवता अधर हाथ में लेले, इसकी सब व्याख्या करी पूर्ववत् कहदेना विशेष इतना है के वहा ४ लड्डू कहे हैं यहां ८ कहना और वहां छे दिशी का अन्त लानेको गये कहा है यहा दश दिशी कहना और लडके की आयुष्य लक्ष वर्ष की कहना तथा गतक्षेत्र की अपेक्षा शेष रहा क्षेत्र अनन्त गुणा कहना शेष रहे क्षेत्रसे गतक्षेत्र अनन्त में भाग है इतना बड़ा अलोक है।

लोक और अलोक किसी देवता ने नापा किया नहीं करे नहीं और करेगा नहीं परन्तु ज्ञानीयों ने ज्ञान से देखा है वैसे ही बतलाया है।

सेवमंते सेवमंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० २७.

श्री भगवती सूत्र श० ५-उ० ८.

(परमाणु.)

हे भगवान्! परमाणु पु० इधर उधर चलता है कि स्थिर है? गौ० स्यात् चलता है स्यात् स्थिर है, भांगा २. दो प्रदेशी की पृच्छा? (१) स्यात् चले (२) स्यात् न चले (३) स्यात् देश चले स्यात् देश न चले एवं भांगा ३, तीन प्रदेशी का भी भांगा ३ पूर्ववत् (४) स्यात् देश चले स्यात् वहोत् से देश न चले (५) स्यात् वहोत से देश चले स्यात एक देश न चले एवं भांगा ५ चार प्रदेशी के ५ भांगा पूर्ववत् (६) वहोत से देश चले, वहोत से देश नहीं चले इसी माफिक ५-६-७-८-९ १० संख्या असंख्या० अनंत० प्रदेशी के सूक्ष्म और वादर के भी छे छे भांगे समझ लेना सर्व भांगे ७६ हुवे।

(२) परमाणु पु० तरवार की धारसे छेदन भेदन नहीं होवे, अग्नि में जले नहीं, पुष्करा व्रत मेग वर्षे तो सडे नहीं एवं दो प्रदेशी यावत् सूक्ष्म अनंत प्रदेशी और वादर अनन्त प्रदेशी छेदन भेदन जले या सडे गले विध्वंस होवे और स्यात् नहीं भी होवे।

(३) परमाणु पु० क्या सार्द्ध है समध्य है, सप्रदेश है, अनार्द्ध है, अमध्य है, अप्रदेश है? इन इन छे वोलों में एक अप्रदेशी है शेष सुन्य है दो प्रदेशी के छे वोलों में दो बोल

पावे सार्द्ध और सप्रदेश एव ४ ६-८-१० प्रदेशी मे भी समझ लेना और तीन प्रदेशी में दो बोल समण्य सप्रदेश एव ५-७ ६ प्रदेशी और सख्यात प्रदेशी में छे बोलों में से १ अप्रदेशी वर्ज के शेष ५ बोल पावे एव असं० अनं० प्रदेशी भी समझलेना।

(४) परमाणु पु० परमाणु पु० ने स्पर्श करता जावे तो नीचे लिखे नो भांगो में से कितना भांगा स्पर्शे (१) देश से देश (२) देश से देशां (३) देश से सर्व (४) देशा से देश (५) देशा से देशा (६) देशा से सर्व (७) सर्वसे देश (८) सर्व से देशा (९) सर्व से सर्व स्पर्श परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल ने स्पर्शतो जावे तो भांगा एक ९ मो परमाणु पुद्गल दो प्रदेशी ने स्पर्श तो तो जावे ते भांगा, दो पावे ७-९ परमाणु तीन परदेशी ने स्पर्श तो जावेतो भांगा ३ पावे ७ ८ ९ एव यावत् अनं० प्रदेशी कहना।

दो प्रदेशी परमाणु को स्पर्शता जावे तो भांग२ पावे ३-९ दो प्रदेशी दो प्र० को स्पर्शता जावे तो भांगा ४ पाये १-३-७ ९ दो प्र० तीन प्र० को स्पर्शता जावेतो भांगा ६ पावे १-२-३ ७ ८-९ एव यावत् अनन्त प्रदेशी समझ लेना।

तीन प्रदेशी परमाणु को स्पर्श करता जायतो भांगा ३ पावे ३ ६-९ तीन प्र० दो प्र० को स्पर्श करता जावेतो भांगा ६ पावे १-३ ४ ६ ७-९ तीन प्र० तीन प्र० को स्पर्श करता जावेतो भांगा ९ पूर्ववत् पावे एव यावत् अनन्त प्रदेशी कहना चार प्रदेशी से यावत् अनन्त की व्याख्या तीन प्रदेशीवत् करनी।

१ देशा जहां आवे वहां बहुवचन समझो।

(५) परमाणु की स्थिती ज० एक समय उ० अस० काल एवं दो प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की भी स्थिती कहदेना ।

(६) एक आकाश प्रदेश अवगाहा पुद्गलों की स्थिती दो प्रकार की है एक कम्पता हुवा जैसे एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश जाने वाला और दूसरा अकम्पमान यांने स्थिर जिसमें कम्पमान की ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग और अकम्प की ज० एक समय उ० असं० काल० एवं दो तीन यावत् असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाहा आदि समझना ।

(७) एक गुण काले पु० की स्थिती ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो तीन यावत् अनन्त गुण काले पु० कीभी समझ लेना इसी तरह ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श भी समझ लेना ।

(८) जो पुद्गल सुक्ष्मपनें प्रणाम्य है वे ज० एक समय उ० असं० काल एवं वादरपने प्रणाम्या भी कहना ।

(९) पुद्गल शब्द पने प्रणाम्या है वे ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग ।

(१०) जो पुद्गल अशब्द पने प्रणाम्या है वे ज० एक समय उ० असं काल ।

(११) परमाणु पु० का अंतर ज० एक समय उ० असं० काल दो प्रदेशी का अंतर ज० एक समय उ० अनंत काल एवं यावत् अनंत प्रदेशी कहना ।

(१२) एक प्रदेश अवगाहा पुद्गल का अंतर ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो तीन यावत् असं० प्रदेशी अवगाहा पु० भी कहना, और कम्पमान सब जगह ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग। वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, सूक्ष्म पने और बादर पने प्रणम्या हुवा कम्पमान, अकम्पमान का अंतर पूर्ववत् समझलेना।

(१३) शब्दपने प्रणम्या का अंतर ज० एक समय उ० असं० काल।

(१४) अशब्द पने प्रणम्या का अंतर ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग।

(१५) अल्पाबहुत्व (१) सबसे स्तोक क्षेत्र स्थानायु (२) अवगाहना स्थानायु असं० गुणा (३) द्रव्य स्थानायु असं०गुणा (४) भाव स्थानायुः असं० गुणा विस्तार सूत्र से देख लेना।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० २८.

श्री भगवती सूत्र श० ११–उ० १

(उत्पल कमल)

(द्वार) उत्पात् १, परिणाम २, अपहरण ३, अवगाहना ४, कर्मवेद ६, उदय ७, उदीर्ण ८, लेश्या ९, दृष्टी १०

ज्ञान अज्ञान ११, योग १२, उपयोग १३, वर्ण १४, उश्वास १५, आहार १६, व्रत्ति १७, क्रिया १८, बंध १९, संज्ञा २०, कषाय २१, वेदबन्ध २२, सज्ञी २३, इन्दीय २४, अनुबन्ध २५, संबाह २६, आहार २७, स्थिति २८, समुद्घात २९, चवन ३०, वेदना ३१, मूलोत्पात् ३२ इति।

यह बत्तीस द्वार उत्पल कमल पर उतारे जावेंगे द्रव्यानु योग में प्रवेश करने वालों के लिये यह विषय बहुत ही उपयोगी है।

राजग्रही नगर के गुण शिला उद्यान में भगवान् श्री वीर प्रभु पधारे उस वखत श्री गौतम स्वामी ने प्रश्न किया हे भगवान् उत्पल कमल के पत्ते में एक जीव है या अनेक गौतम पत्ते में एक जीव है परन्तु उसकी निश्राय में अनेक जीव उत्पन्न होते हैं याने पत्ते की डंडी में मूलगा एक जीव रहता है शेष उसकी नेश्राय से पत्ते में असंख्यात जीव है।

(१) उत्पात्—चोहत्तर जगह से आके उत्पन्न होते है यथा ४६ त्रियंच ३ मनुष्य (पर्याप्ता, अपर्याप्ता, समुत्सम) २५ देवता (भुवनपति १०, व्यंतर ८, ज्योतिषी ५, पहला दूसरा देवलोक) इन ७४ जगह से आके जीव उत्पन्न होते हैं.

(२) परिमाण—एक समय में १-२-३ यावत् संख्याता असंख्याता उत्पन्न होते है।

(३) अपहारण—इस एक पत्ते के जीवों को एकेक समय एकेक निकले तो असंख्याता काल याने असं० उत्सर्पणी

अवसार्पणी व्यतीत होजाय इन जीवों को किसी ने निकाला नहीं निकालेगा नहीं परन्तु ज्ञानियोंने देखा है।

(४) अवगाहना—उत्पल कमल की अवगाहना ज० अंगुल का असख्यातमा भाग उ० एक हजार योजन कुछ अधिक।

(५) कर्मबन्ध—ज्ञानवर्णीय कर्म के बंधक स्यात् एक जीव मिले स्यात् बहुत जीव मिले एवं आयुष्य कर्म वर्ज के शेष ७ कर्म कहना और आयुष्य कर्म बन्धक का भागा ८ (१) आयुष्य कर्म का बन्धक एक (२) अवधक एक (३) बंधक बहोत (४) अबधक बहोत (५) बधक एक अबधक एक (६) बधक एक अवधक बहोत (७) बधक बहोत अवधक एक (८) बधक बहोत अवधक भी बहोत इसी माफक जहा आगे फिर कहीं ८ भागा कहें उसको भी इसी तरह लगा लेना सात कर्मों के १४ भागे यथा ज्ञानवर्णी का एक और ज्ञान वर्णीय के बहोत इस तरह एक वचन बहुवचन करने से १४ भागे हुवे और ८ आयुष्य के एवं २२ भागे।

(६) कर्मवेद—ज्ञानावर्णीय कर्म वेदने वाले किसी समय एक और किसी समय बहोत जीव मिले एवं वेदनीय कर्म छोड के शेष ७ कर्मों के १४ भागे और वेद नीसाता, असाता दो प्रकार की वेद इसलिये इसके ८ भागा पूर्ववत् एवं २२ भागा।

(७) उदय ज्ञानावर्णीय के उदय वाला किसी समय एक जीव मिले और किसी समय वहोत एवं अन्तराय यावत् ८ कर्म के १६ भांगे हुवे।

(८) उदीर्णा–वेदनी और आयुष्य कर्म को छोड के शेष ज्ञानावर्णीयादि ६ कर्मों के एक वचन बहुवचनाश्री १२ भागे और वेदनी आयुष्य के ८–८ भांगे पूर्ववत् समझना एवं २८ भांगे।

(९) लेश्या--उत्पपल० में चार लेश्या कृष्ण, नील, कापोत, और तेजो इन चार लेश्याओं के अस्सी भांगे होते हैं यथा असंयोगी ८ किसी समय कृष्णलेसी एक, किसी नील लेसी एक, किसी समय कापोतलेशी एक और किसी समय तेजोलेशी एक यह एक वचनापेक्षा चार भांगा इसी तरह बहु वचन के भी चार भांगा समझ लेना एवं ८ द्विक संयोगी २४

कृष्ण,	नील	कृष्ण,	कापोत	कृष्ण,	तेजो
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३
नील,	**कापोत**	**नील,**	**तेजो**	**कापोत,**	**तेजो**
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

त्रिक सयोगी ३२

कृ०	नी०	का०	कृ०	नी०	ते०	कृ०	का०	ते०	नी०	का०	ते०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

चतुष्क सयोगी १६ भागा।

कृ०	नील	का०	ते०	कृ०	नील	का०	ते०
१	१	१	१	३	१	१	१
१	१	१	३	३	१	१	३
१	१	३	१	३	१	३	१
१	१	३	३	३	१	३	३
१	३	१	१	३	३	१	१
१	३	१	३	३	३	१	३
१	३	३	१	३	३	३	१
१	३	३	३	३	३	३	३

एव ८,२४,३२,१६ मिला के सब ८० भागे हुवे इसी माफिक आगे कषाये द्वार तथा सज्ञा द्वार कहेंगे वहा भी ८० भागे समझ लेना।

(१०) द्रष्टी-मिथ्यां दृष्टी है वे किसी समय एक मिले और किसी समय वहुत्व मिले इसलिये भांगा दो और भी जहां दो भांगा लिखें वहां यही दो भांगे समझना।

(११) ज्ञान-अज्ञान भांगा दो पूर्ववत्।

(१२) योग-एककाय योगी है भांगा २ पूर्ववत्।

(१३) उपयोग-साकार उपयोग, अनाकार उपयो ८ भांगा ८ असंयोगी ४ द्विसंयोगी ४ साकार १-३ अनाकार १-३ और साकार अनाकार ११-१३-३१-३३।

(१४) वर्ण-जीवापेक्षा अवर्णयावत् अस्पर्श है और शरीरापेक्षा ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श।

(१५) उस्वास-उस्वासगा हैं निस्वासगा है और नो उस्वासगा निस्वासगा है (वाटे वहतां) जिसके भांगा २६ यथा असंयोगी ६ तीन एक वचन ३ वहुवचन।

द्वि० वचन, द्विसंयोगी १२ त्रिक संयोगी ८

उ०	नि०	उ०	नो०	नि०	नो	उ०	नि०	नो०	उ०	नि०	नो
१	१	१	१	१	१	१	१	१	३	१	१
१	३	१	३	१	३	१	१	३	३	१	३
३	१	३	१	३	१	१	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	१	३	३	३	३	३

(१६) आहारक-आहारक है भांगा २ पूर्ववत्।

(१७) वृत्ति-अवृत्ति है भांगा २ पूर्ववत्।

(१८) क्रिया–सक्रिय है भागा २ पूर्ववत् ।

(१९) बन्ध–सातकर्म का बन्धगा, आठ कर्म का बन्धगा जिसका भागा ८ पूर्ववत् ।

(२०) संज्ञा–आहारादि चारों संज्ञा पावे, जिसके भागा ८० पूर्ववत् ।

(२१) कषाय क्रोधादि चारों कषाय पावे भागा ८० पूर्ववत्

(२२) वेद–एक नपुंसक है भागा दो पूर्ववत् ।

(२३) वेदबन्ध–स्त्री, पुरुष, नपुंसक तीनों वेद के बाधने वाले है भागा २६ पूर्ववत् ।

(२४) संज्ञी–असज्ञी है भागा दो पूर्ववत् ।

(२५) इन्द्रिय–सइन्द्री है भागा दो पूर्ववत् ।

(२६) अनुबन्ध माने काय स्थिती–ज० अन्तर मु०उ० असख्याता काल ।

(२७) संवट्ट–उत्पल कमल का जीव अन्य स्थान में जाकर पीछा उत्पल कमल में आवे जैसे पृथ्वी और उत्पल कमल में गमनागमन करे ऐसे ही अन्य काय में भी गमनागमन करे उसे "संवट्ट" कहते है ।

उत्पल और पृथ्वी में गमनागमन करे तो जिसका दो भेद एक भवापेक्षा और दूसरा कालापेक्षा जिसमें भवापेक्षा ज० दो भव उ० असं० भव और काल ज० दो अन्तर मु० उ० असं० काल इसी तरह अप, तेउ, वाउ, में समझना

बनास्पति ज० दो उ० अनं० भव और काल ज० दो अंतरमु० उ० अनं० काल तीन विकलेंद्री में ज० दो भव और काल पृथ्वीवत् उ० सं० भव और सं० काल त्रियँच पंचेंद्री और मनुष्य ज० दो भव और काल पृथ्वीवत् उ० ८ भव करे और काल प्रत्येक पूर्वकोड ।

(२८) आहार—२८८ बोल का आहारले परंतु नियमा छे दिशी का (देखो शीघ्रबोध भाग २)

(२९) स्थिती—ज० अंतर मु० उ० दश हज़ार वर्ष ।

(३०) समुद् घात—तीन पावे, कषाय, वेदनी और मरण तथा समोईया असमोईया दोनो प्रकार से मरे ।

(३१) चवण—उत्पल का जीव चवके ४९ जगहजावे ४६ त्रियँच ३ मनुष्य कर्म भूमीका पर्या० अपर्या० समुर्च्छिम ।

(३२) मूलद्वार--सर्व प्राण, भूत, जीव, सत्व याने सर्व संसारी जीव उत्पल कमल के मूल, स्कंध, ताल, पत्र, केसरा-करणिकादि पणे अनन्तीवार उत्पन्न हुवा है यथा असइ अदुवा अणंति रकुतो ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

